आर.एन.आई. नं. एम.एआर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" जनवरी 2026

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 36
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

वर्ष –27 । अंक–1 । पौष–माघ – स.2082 । जनवरी 2026

नया वर्ष आपके जीवन में अपार खुशीयां व उत्साह लेकर आये।
सफलता अपके कदम चूमें और आप सदैव मुस्कराते रहे।।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

तिरंगे की शान

में बसता हमारा गौरव,
और परिवार की
सुख-शांति में बसती
हमारी सेवा।

गणतंत्र दिवस की
शुभकामनाएँ

आज गणतंत्र दिवस पर हम उन सभी ग्राहकों के आभारी हैं
जिन्होंने हमें अपने घर की रसोई में विश्वास का स्थान दिया।

देश के संविधान का अर्थ है सुरक्षा, सुविधा
और सम्मान और इन्हीं सिद्धांतों को रेखा गैस एजेंसी
हर परिवार तक पहुँचाने का प्रयास करती है।

**आइए, आज के दिन कर्तव्य
और देशप्रेम को फिर एक बार हृदय में जगाएँ।**

Bharatgas
COOK FOOD. SERVE LOVE

रेखा गॅस
एजन्सी

दु.नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001
(0257) 2221095 | 2221195 | 2225195 | 2228495.
rekhagas20032003@rediffmail.com

(र.क्र. 3355)

माथुर चतुर्वेदी समाज के लिये आईसेक्ट प्रकाशन (भोपाल) की महत्वपूर्ण पहल

माथुर चतुर्वेदी बांधवों को पुस्तक प्रकाशन में विशेष छूट

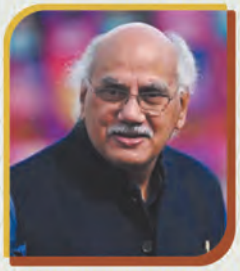

आईसेक्ट पब्लिकेशन

श्री संतोष चौबे
आईसेक्ट प्रकाशन (निदेशक)

डॉ. विनीता चौबे
आईसेक्ट प्रकाशन (निदेशक)

मध्यभारत भोपाल में स्थित आईसेक्ट प्रकाशन शिक्षा, कला, साहित्य, अनुवाद, शोध–पुस्तकें तथा अन्य विधाओं की राष्ट्रीय एवं अंतर–राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकें प्रकाशित करने वाला प्रमुख पब्लिकेशन है। आईसेक्ट पब्लिकेशन द्वारा माथुर चतुर्वेदी समाज के बांधवों हेतु विशेष पहल करते हुये कम लागत में पुस्तक प्रकाशित करने का सुअवसर प्रदान किया जा रहा है।

पब्लिकेशन द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवायें

- रचनाकार को प्रकाशन से संबंधित मैटर कंपोज कर प्रूफिंग के साथ उपलब्ध कराना होगा। प्रिंटिंग की सेवा पब्लिकेशन द्वारा उपलब्ध कराई जाएगी।
- ब्लैक एण्ड व्हाइट एवं कलर पुस्तक प्रकाशन।
- आकर्षक पुस्तक कवर।

पब्लिकेशन से पुस्तक प्रकाशन के लाभ

- प्रकाशित पुस्तक आईसेक्ट पब्लिकेशन की पुस्तक सूची में शामिल की जाएगी।
- पुस्तक देश के सुप्रसिद्ध पुस्तक मेलों में बुक स्टॉल लगाकर उपलब्ध कराई जाएगी।
- पुस्तक की समीक्षा सुप्रसिद्ध पत्रिकाओं में प्रकाशित कराने का प्रयत्न किया जाएगा।
- भोपाल में पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम की सुविधा।
- पुस्तकें अमेजन, मीशो, आईसेक्ट आनलाइन जैसे ई–पोर्टल पर बिक्री के लिये उपलब्ध कराई जाएगी।

विशेष - लेखक को कुल बिक्री के आधार पर वर्ष में एक बार पब्लिकेशन के नियमानुसार रॉयल्टी उपलब्ध कराई जाएगी।

प्रकाशन हेतु संपर्क करें – ई–7/22, अरेरा कालोनी, भोपाल–16 (मप्र) **9826493844, 9039535983**

(र.क्र. 3348)

स्मृति शेष

स्व. श्रीमती सरोज
पत्नी स्व. श्री दयानंद जी
स्वर्गवास दि. 16.01.2018

स्व. श्रीमती पदम
पत्नी स्व. श्री हेमचंद्र जी
स्वर्गवास दि. 30.01.2018

स्व. श्रीमती गीता
पत्नी डॉ. दिवाकरनाथ जी
स्वर्गवास दि. 26.01.2012

श्रद्धावनत

सर्वश्री डॉ. दिवाकर नाथ, भरत चन्द्र, सुभाष चंद्र, सर्वेश चंद्र, हृदय कान्त, मोहन, विवेक चंद्र, पवन कुमार, मनीष , मोहिल एवं हितेष, अर्पित, अनमोल, मितार्थ
श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (सभापति, महासभा), रेखा, अंजू, प्रतिभा, चित्रा, मनीषा, शालिनी, डॉ. उन्नति एवं समस्त जौनमाने परिवार पुरा कन्हैरा

(र.क्र. 3352)

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से अपनी बात	6
संपादकीय	7
लड़की के ब्याह का आखिरी भाग....	8
पौष मास : छोटे पितृ पक्ष का महत्व	9
हिंदी और उसकी क्षेत्रीय बोलियाँ	10
जरा मुस्कराईए	13
आंतरिक- महाभारत	14
प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम 2021	16
समाज की विभूति	17
साधु का आशीर्वाद	18
खोले के हनुमान जी- जयपुर	20
चाट वाली गली के गोल गप्पे	21
'मेरा भारत कहाँ खो गया'	23
मकरसंक्रांति – महत्व और परम्परा	24
ठंडी में रोज़ाना मूली क्यों ज़रूरी?	26
शाखा समाचार	29
समाज समाचार	31
बिछड़े स्वजन	32

अंक 1
जनवरी 2026, वर्ष - 27

सभापति
श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री शशांक चतुर्वेदी
मोबा. 9826086879

कोषाध्यक्ष
श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 9312242661

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. विनीता चौबे, भोपाल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', BM57, नेहरू नगर
करूणाधाम आश्रम के सामने, भोपाल
मोबा. 8707894349
ई- मेल :
sampadak2024.chandrika@gmail.com

उपसंपादक
लोकेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, गाजियाबाद

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED
BHIM UPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका
वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : शशांक चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक : **दिलीप सिकन्दरपुरिया**
वितरण सहयोगी : विश्वास चतुर्वेदी - 8160686094

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

।। अपनों से अपनी बात।।

ऊषा चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

आदरणीय बन्धुवर/भगिनी
सादर पालागन
"रुतबा खामोशियों का होता है,*
अल्फाज़ का क्या *!!
बदल जाते हैअक्सर*
।। हालात देखकर*

आशा है आप सपरिवार इष्ट मित्रो सहित प्रसन्न चित्त होगे। फिरोजाबाद में संपन्न हुई राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में सदस्यता अभियान के ऊपर चर्चा हुई थी, तथा महासभा के नए सदस्य बनने के लिए एक समिति का गठन भी किया गया था। जो सदस्यता का कार्य देखेगी ।समिति में। श्री आशुतोष जी कानपुर, श्री संजय मिश्रा कानपुर, श्री अभिषेक ग्वालियर, श्री प्रदीप गाजियाबाद, श्री नवीन जी लखनऊ, श्री मधुपम जी मुंबई, श्री संजय फरीदाबाद, श्री खगेश जी कोलकाता एवं हितेश पूरा कनेरा को मनोनीत किया गया था। आशा है यह समिति अपना कार्य सुचारू रूप से कर रही होगी, मुंबई में आहुत होने वाली बैठक जो की जनवरी 2026 में होगी उसमें अवश्य ही नए सदस्यों की जानकारी हम सभी को प्राप्त होगी।

कोई भी संगठन हो सदस्यता उसकी शक्ति होती हैं । 2024 में सदस्यता अभियान ने श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा को एक नई शक्ति प्रदान की थी। इस बार भी हमारी समिति के सभी सम्मानित सदस्य अवश्य ही सदस्यता अभियान की चुनौती स्वीकार करेंगे। एक विचार आप सभी लोगों के सम्मुख रखना चाहती हूँ, व्यक्ति की बढ़ती हुई व्यस्तता, महंगाई तथा हमारी परंपराओं को नए परिवेश में करने की इच्छा ने शादी विवाह को और अधिक खर्चीली बना दिया हैं, ऐसे समय में हम सभी लोगों को दिन में शादी करने के बारे में विचार करना चाहिए, और यह कार्य प्रारंभ भी हो गया है मैं ऐसे परिवारों को धन्यवाद एवं बधाई प्रेषित करती हूँ। वर्तमान समय को देखते हुए यह उचित भी है। निश्चित ही समाज को इस पर गंभीर रूप से मनन करना चाहिए। विभिन्न शाखा सभाओं द्वारा पिकनिक के कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है कार्यक्रम की योजना बनाते समय इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि हमारे युवा पीढ़ी की भागीदारी इसमें बढे उनकी रुचि एवं कैरियर से संबंधित कार्यक्रम भी समायोजित किया जाए। हमारे वरिष्ठ जन जो वहां उपस्थित होते हैं उनके अनुभवों का लाभ भी प्राप्त किया जाए जो हमारी नई पीढ़ी के लिए मार्गदर्शन का कार्य करेगा। आप लोगों के विचारों की प्रतीक्षा रहेगी, मेरा आग्रह आप लोग स्वीकार करेंगे एवं अपने विचार प्रकाशित करने हेतु अवश्य ही चतुर्वेदी चंद्रिका के संपादक जी के पास भेजेंगे।

हमारे समाज की एक और उपलब्धि की जानकारी आप लोगों को प्रेषित करना चाहती हूं श्री आशुतोष चतुर्वेदी पुत्र डॉक्टर महेश चंद चतुर्वेदी को केंद्रीय सूचना आयुक्त दिल्ली मनोनीत किया गया है और उन्होंने अपना कार्यभार 15 दिसंबर को ग्रहण कर लिया है। चतुर्वेदी महासभा उनको बधाई प्रेषित करती है तथा स्वयं को गैरवान्वित अनुभव करती है।

अन्त मैं इतना ही कहूँगी हमें समय की मांग के साथ चलना है,। हमारे परिवार के प्रियजन जो इस नश्वर संसार को छोड़कर भगवान के श्रीधाम को चले गए ऐसी सभी पुण्य आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करती हूं तथा ईश्वर से प्रार्थना करती हूं उनको शांति प्राप्त हो तथा परिवार को गहन दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

सादर पालागन सहित

दिलीप सिकंदरपुरिया

संपादकीय

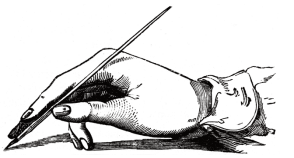

आदरणीय बंधुवर सादर पालागन एवं हार्दिक अभिनंदन।

आज बचपन में सुनी एक कहानी याद आई-- कुछ बालक छत पर खेल रहे थे, तभी एक बालक ने पूछा यदि एकदम से कोई संकट खड़ा हो जाए तो हम क्या करेंगे ??

एक ने जोर से बोला- मैं दोड़ते हुए नीचे चला जाऊंगा, फिर दूसरा बोला मैं रस्सी के सहारे जल्दी से जल्दी पहुंचूंगा। एक बोला मैं पाइप से उतर कर जाऊंगा, तभी एक बालक उठा और चिल्लाने लगा कि मैं तो ऐसा करुंगा -- यह कहते हुए उसने नीचे छलांग लगा दी, सभी बालक घबराते हुए चिल्ला कर नीचे दौड़े, देखा तो वह बालक कपड़े छाड़ते हुए खड़ा था,मुस्कुरा कर बोला -- भला केवल बातें करने से क्या होगा, असली साहस तो काम करने में ही है।

इस कहानी का तात्पर्य है कि आज हम सब शारीरिक परिश्रम के बजाय अपने-अपने मानसिक द्वंद्व में उलझे रहते हैं, विशेषकर पारिवारिक एवं सामाजिक कार्यो में सुझावों की अधिकता के साथ सभी सहयोग एवं समर्थन करते हुए दिखाई देते हैं, लेकिन जिम्मेदारी के साथ कार्यवाही करने वाले कम ही दिखते हैं, इससे आरोप प्रत्यारोप का दौर शुरू हो जाता है, संभवत पारिवारिक एवं सामाजिक अलगाव की शुरुआत यहीं से होती है, अलगाव के हनीमून की समाप्ति पर हमको अकेलापन महसूस होने लगता है ,जो सभी सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन की समस्यायों का प्रमुख कारण होता है।

न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार तनाव एवं अवसाद से व्यक्तिगत जीवन में प्रकाश की बजाय अंधकार के अवसर बढ़ सकते हैं। इससे व्यक्तिगत एवं परिस्थितिजन्य समस्याएं बढ़ती जाती है, अकेलापन न केवल तनाव एवं अवसाद बढ़ाता है बल्कि व्यक्ति में नैसर्गिक भाव प्रेम, करुणा, सहनशीलता के बजाय भय, घृणा, असहनशीलता के भाव बढ़ने लगते हैं।

आधुनिक आत्मकेंद्रित भौतिकवादी जीवन चर्या में इन कारणों से सफल बने रहने तथा असफल होने का भय बढ़ता जाता है,जो कई शारीरिक एवं मानसिक समस्याओं का कारण बन सकता हैं।

जिंदादिली ही जिंदगी है तात्पर्य यह है कि व्यक्ति के लिए सफलता-असफलता, सुख-दुख परिस्थितिजन्य अनुभव मात्र है, जीवन -मरण का सबब नहीं है। पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में सहभागिता एवं समरसता से अकेलापन महसूस नहीं होता अतएव अवसाद व तनाव से मुक्ति पाकर हम अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए एकाग्र होकर लगन से अथक प्रयास कर सकते हैं।

सामाजिक सामंजस्य बनाए रखने में महासभा के मुखपत्र चतुर्वेदी चंद्रिका की भूमिका भी महत्वपूर्ण भूमिका हैं। अपनी बात में अध्यक्षा उषा जी ने भाषा की मर्यादा एवं शालिनता पर जोर दिया है ,डॉ निखिल जी ने नवजात की देखभाल में उपयोगी जानकारी दी है, तो प्रेम जी नोएडा ने अपनी कहानी राधेश्याम के रिश्तेदार में पशु-पक्षी कल्याण के माध्यम से जीवन जीने का अच्छा विचार दिया है। वैज्ञानिक व्यवहार में लेखक ने दिनचर्या को व्यवस्थित करने के सुझाव दिए हैं। पत्रिका न मिलने की शिकायत तो बहुत होती है, लेकिन जिनको मिलती है वो पत्रिका में प्रकाशित सामग्री कैसी लगी या पत्रिका से क्या चाहते हैं ? पर दो शब्द भी नहीं लिखते। पत्रिका निरन्तरता हेतु सभी के लेख, सुझाव विज्ञापन अति आवश्यक है।।

मकर संक्रांति, बसंत पंचमी एवं गणतंत्र दिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं।

लड़की के ब्याह का आखिरी भाग....

- नीमा सुधीर चतुर्वेदी, मुंबई

विवाह पर भांवरे होने के बाद वर वधू मातृकाए पर अक्षत छोडने जाते है। अब तो जल्दी विदा की बोलने लगे है। पहले ध्यान इस बात का रखा जाता था ,कि शाखोच्चार ऐसे समय से तय किया जाये , जिसमे बारात के लिये कलेबा व शाखोचार का जलसा ऐसे समय पर हो जो कि जो अन्य परिवारो मे 'भोजन का समय ' न हो (पहले समय घर की सभी स्त्रियां मिल कर ही दूसरे दिन का खाना बनाती थी)

शखोच्चार का बोला लगाया जाता था : शाखोचार की तैयारी इसके लिये घर बुहार कर साफ किया जाता था (ध्यानदेने योग्य बात है कि बुहारी मंडप के नीचे वेदी के आस पास नही फेरी जाती थी) छत से स्त्रियां शाखोचार का जलसा देखती थी। पान लगाकर रखे जाते थे ,शरबत , इत्र, गुलाब जल ,तम्बाकू,लवंग ,आदि लगाने व बांटने का प्रबंध होता था। चार दुपट्टे,पहरावन के अथवा मलमल के थान सो फाडे हुए वर व कन्या पक्ष की ओर से शाखोचार पढने वाले गुरू को दिये जाते थे। हल्दी मे रंगे हुए चावल ,एक थाली मे रोली , अक्षत व लोटे मे पूजा के लिए जल भी देते थे। शाखोचार का जलसा सुबह बारात आने पर वधू व वर को मंडप के नीचे विवाह वस्त्रो मे ही बैठाया जाता है बारात आने पर आगौनी की भांति, धरातीयो की पालागन करती द्विपक्ति के बीच से, बाराती क्रमबद्ध पंक्ति पालागन करती हुई चलती है कन्या के द्वार पर एक सज्जन पान व ऐपन लिये खडे रहते है जो कि आते हुए बाराती के छाती पर एक पान को ऐपन से लगा दिया जाता था। यह मंगल चिन्ह माना जाता था [जो अपने कपडो पर नही लगाना चाहते वे रूमाल को आगे लगा लेते थे ,उस पर लगवा लेते थे।

श्रीवर को चांदी के गिलास मे शरबतदेते थे, फिर बारातियो को धातु गिलास मे देते थे।सभी बारातियो पर इत्र छिरक कर स्वागत किया जाता था।

नोट...अब ये चलन ना के बराबर ही है : दोनो पक्ष के गुरू को मान्यो के द्वारा तिलक लगाकर एक एक दुप्टटा देते है, दोनो गुरू बारी बारी से प्रथम वर फिर वधू के गोत्र, प्रवर, वेद, शाखा, कुलदेवी आदि के साथ प्रपितामह, पितामह व पिता का नाम लेकर शाखोच्चार पढते है। (विवाह मे कन्यादान के समय जो शाखोच्चार पढा गया उस समय सभी बाराती, घराती पंच उपस्थित न थे)

इसलिये ही सार्वजनिक रूप से शाखोच्चार पढा जाता है।

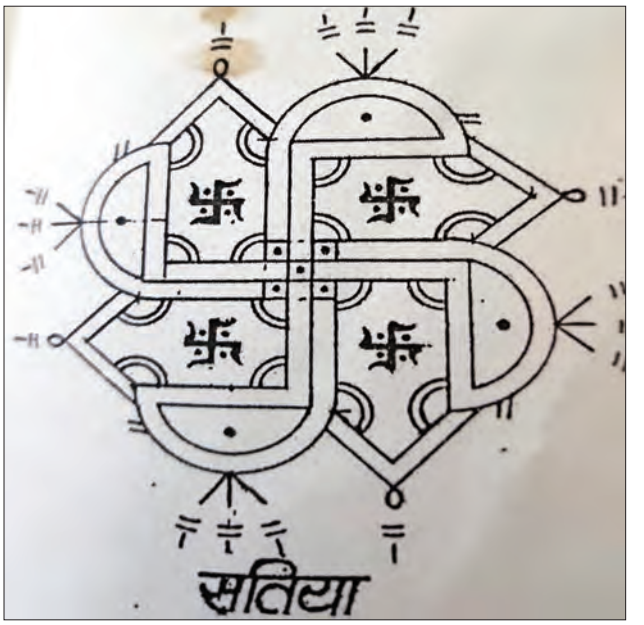

पांव-पखरावनी वधू व श्रीवर को यथास्थान बैठाकर उनके बीच मे जलयुक्त परात रख दी जाती है फिर धरात की ओर से सभी कुटुम्बी, रिस्तेदार, ग्राम नगर के लोग सभी वर कन्या के पांव पखार उनके तिलक करको रूपये देते है।

गौरी पूजन . कन्या द्वारा आज का गौरी पूजन करती है , सुख सौभाग्य की प्रार्थना करती हुई उनके समक्ष कन्या अपनी मांग भरती है। बाती मिलाई व कुंवर कलेवा ये दोनो संस्कार विलुप्त की कगार पर है। देहरी पूजन गौरी पूजन पश्चात कन्या को जलपान करा कर देहरी पूजन कराया जाता है देहरी के भीतरी भाग को लीप कर सतिया लगाया जाता है।कन्या का भाई अपनी मुठ्ठी मे धान तीन बार भरकर कन्या के पसे मे डालता है, और कन्या उन्हे देहरी पर गिरा कर विखेर देती है,

नोट....ये इसलिये किया जाता है जिससे कन्या के जाने के पश्चात घर मे धन धान्य की कमी ना हो।

भाई द्वारा बहन को आयी हुई गाडी या वाहन मे बैठा दिया जाता है।श्रीवर को मण्डप पर बुलाकर सभी घराती महिलाये तिलक करके रूपये देती है, सभी के तिलक करने के पश्चात लडकी की मां श्रीवर के चांदी के गिलास मे चीनी भर कर तिलक करती करती है व मण्डप मे लगी गांठ को श्रीवर से खुलवाया जाता है जिसे गुत्त छुडाई बोला जाता है। क्रमशः

पौष मास : छोटे पितृ पक्ष का महत्व

- अश्वनी कुमार

पौष मास को छोटा 'पितृ पक्ष' भी कहा जाता है। इसमें भी विशेष रूप से पौष मास की अमावस्या पितरों के लिए खास महत्व रखती है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन पितरों की पूजा करने पर उन्हें मुक्ति मिलती है। इससे प्रसन्न होकर वे आशीर्वाद स्वरूप हमारे कार्यों में आ रही बाधाओं को दूर कर हमें सुख-समृद्धि प्रदान करते हैं।

पौष मास की पूर्णिमा को चंद्रमा पुष्य नक्षत्र में होता है, इसलिए इसे पौष कहते हैं। पौष मास में ही धनु संक्रांति होती है। सूर्य के धनु राशि में जाने पर 'खर' मास आरंभ होता है। इस मास में मांगलिक और शुभ कार्य वर्जित होते है। पौष मास में भी 'भग' नाम के सूर्य की उपासना की जाती है। सूर्य और पितरों की उपासना के साथ-साथ धार्मिक आध्यात्मिक चिंतन के लिए इस मास को श्रेष्ठ माना जाता है। कल्पवास भी पौष पूर्णिमा से शुरू होकर माघ पूर्णिमा तक चलता है। यह एक महीनें की आध्यात्मिक साधना है, जो मुख्य रूप से तीर्थराज प्रयागराज के संगम तट पर की जाती है।

पवित्र पौष मास (05 दिसंबर से आरंभ) को छोटा 'पितृ पक्ष' भी कहा जाता है। कनागत यानी सूर्य के कन्या राशि में आनें पर होने वाले मुख्य पितृ पक्ष के अलावा इस माह में भी श्राद्ध कर्म तथा पिंडदान के साथ-साथ भगवान विष्णु और सूर्य की पूजा का विशेष महत्व है।

सम्पूर्ण पौष मास, विशेषकर पौष अमावस्या पितरों को मुक्ति दिलाने का दिन है। इस दिन की पूजा करने से पितरों के देवता 'अर्यमा' प्रसन्न होकर वंश, धन, आयु, बल की वृद्धि करते हैं। अमावस्या तीन तरह की बताई गई हैं। सूर्यादय से शुरू होकर पूरी रात अमावस्या तिथि हो, तो उसे 'सिनीवाली अमावस्या' कहा जाता है। चतुर्दशी के साथ अमावस्या तिथि हो, तो उसे 'दर्श अमावस्या' कहा गया है। इसके अलावा जब अमावस्या के साथ प्रतिपदा तिथि भी हो तो उसे कुहू अमावस्या' कहा गया है।

लोकमानस में पौष अमावस्या के व्रत से जुड़ी एक कथा प्रचलित है। किसी गांव में एक गरीब ब्राह्मण था। बहुत यत्न करने पर भी गरीबी के कारण उसकी बेटी का विवाह नहीं हो पा रहा था। एक दिन उसके घर एक सिद्ध साधु आए। आशीर्वाद दिया। यही नहीं,उसकी कन्या का शीघ्र विवाह हो जाए, उसके लिए एक उपाय

भी बताया। साधु ने उस कन्या से कहा कि यहाँ से कुछ दूरी पर एक गरीब परिवार रहता है। यदि वह प्रतिदिन वहाँ जाकर उसकी पत्नी की सेवा तो उसके आशीर्वाद से उसके विवाह में आने वाली रुकावट दूर हो जाएगी और उसका विवाह शीघ्र हो जाएगा।

साधु के कहे अनुसार वह लड़की कार्य करने लगी। उसे घर में रहने वाली स्त्री यह देखकर हैरान थी कि पिछले कई दिनों से सुबह उसके उठनें से पहले ही कोई उसके सारे काम कर जाता है। उसके मन में यह जानने की उत्सुकता हुई। अगले दिन वह सुबह जल्दी उठकर छिप जाती है। कुछ देर में वह लड़की आई और उसने रोज की तरह झोपड़ी की साफ-सफाई की। तभी वह स्त्री उसके सामने आ गई और उसने इसका कारण पूछा। लड़की ने उसने साधु वाली सारी बात बता दी और उसे लड़की की सेवा से खुश होकर उसके शीघ्र विवाह का आशीर्वाद दिया।

उ लेकिन आशीर्वाद देने के कुछ दिन बाद ही उस स्त्री के पति की मृत्यु हो गई। इतना होने पर भी उसने हिम्मत नहीं हारी और झोपड़ी के बाहर लगे पीपल के वृक्ष की पूजा करते हुए 108 परिक्रमा की और अपने पति का जीवन लौटने की प्रार्थना की। उसकी पूजा से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उसके पति को जीवित कर दिया। ऐसा लोक विश्वास है कि जो व्यक्ति पौष अमावस्या के दिन स्नान-दान कर पीपल की न विष्ण की पूजा करता है।

साभार

हिंदी और उसकी क्षेत्रीय बोलियाँ

- पंडित शिवदत्त चतुर्वेदी, इटावा

भारत-भारती-भागीरथी के इस विपुल प्रवाह का बहुत कुछ श्रेय उसकी सहायक नदियों, इन क्षेत्रीय बोलियों को ही है। यह जानकारी भी उनके महत्त्व और उनकी निरन्तरता को कायम रखने के लिए हम क्या कर रहे हैं ? समय चाहे जितना बदले भारतीय हृदयों में जिन भावनाओं का बहिष्कार कभी भी नहीं हो सकता। उनकी प्रेरणाओं का अमर सरोत ये उपभाषाएँ हैं, यह बात प्रत्येक हिन्दी साहित्यसेवी के मन से कभी न उतरना चाहिए। ब्रज, अवधी, बुन्देली, भोजपुरी आदि उसकी क्षेत्रीय भाषाएँ खड़ी बोली की ही भाँति हिन्दी के शरीर की शिराएँ हैं और उनका समवेत साहित्य उसका प्राण-वायु है। जिसके बिना उसका कोमल कान्त और कमनीय कलेवर कालान्तर में निर्जीव सा हो जायगा इसमें सन्देह नहीं। शरीर के विविध अंगोपांगों के साथ-साथ समुचित विकास पर ध्यान न देकर अंग विशेष पर ही समस्त शक्ति केनद्रित कर विकसित करने की चेष्टा अन्ततोगत्वारो की ओर ले जाती है, स्वास्थ्य की ओर नहीं। केवल खड़ी बोली और उसकी सन्तति गद्य को ही 'सर्वस्व' समझ हमारे साहित्यकार क्षेत्रीय भाषाओं की उपेक्षा करते हुए चलते रहे तो वे 'पेड़ काटि तकें पल्लव सींचा' वाली उक्ति भले ही चरितार्थ न करें, परन्तु वे अपने को उस माली के समान सिद्ध तो कर ही देंगे; जिसने केवल गुलाब की नयी पौध के पोषण-परिवद्ध न करते रहने की धुन में अन्य द्रुम लताओं को न सींचकर उद्यान की संज्ञा ही बदल दी। एक क्यारी सींची शेष उपवन सुखा दिया।

अस्तु निष्पक्ष भाव से यदि गम्भीरतापूर्वक सोचें तो हम अनुभव करेंगे कि हिन्दी के अत्यन्त महत्वपूर्ण अंगों, क्षेत्रीय बोलियों के प्रति उदासीनता या उपेक्षा की नीति किसी दिन घातक सिद्ध होगी। उन्हें साथ लेकर न चलने से एक तो वे स्वयं पनप न सकेंगी दूसरे उनके व्यापक रूप में पठन-पाठन के रुक जाने पर हिन्दी हमारी सहस्राब्दियों पुरानी सभ्यता, संस्कृति, धर्म, समाज-व्यवस्था तथा राजनीति की सतरंगी झलक न रहेगी, जिससे विहीन उस साहित्य को हम अपना सच्चा प्रतिनिधि करने की स्थिति में न रहेंगे। उस भयावह स्थिति और अपने प्रतिनिधित्व से रहित उस साहित्य की कल्पना मात्र हमारे लिए रोमांचकारी है।

विगत वर्षों में क्षेत्रीय बोलियों की जो उपेक्षा हुई है उसका ही परिणाम यह है कि आज का छात्र इनकी मधुरतम रचनाओं का यथेष्ट रसास्वादन कर सकने में असमर है। इसका कारण यह भी है कि उसे इनके साहित्य के दर्शन अपनी पाठ्य पुस्तकों के कतिपय पृष्ठों के अतिरिक कहीं अन्यत्र होते ही नहीं। अपनी कक्षाओं के बाहर हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के पढ़ने से भी जो तद्विषयक सहायक योग्यता आनी चाहिए वह भी इसलिए आ पाती कि वहाँ भी इन उपेक्षित जनपदीय भाषाओं की पूछ नहीं। विगत पीढ़ियों के लोग विधिवत अध्ययन किए बिना भी अपने पुराने कवियों की रचनाएँ जिस सरलता और स्पष्टता से समझ लेते हैं, उस प्रकार आज का नवयुवक नहीं समझ पाता है। दुःख और आश्चर्य होता हैं। जब उच्च कक्षा के छात्र ब्रज या अवधी की उत्कृष्टतम रचना की अनुभूति और समझ के साथ नहीं पढ़ पाते। इसमें प्राध्यापक का भी दोष नहीं। इसके लिए निश्चय ही उत्तरदायी हैं वे लोग जिन्हें यह नहीं सूझा कि जिन कवियों की कृतियों को हमें विश्वविद्यालयों की उच्चातिउच्च कक्षाओं में पढ़वाना हैं। उनके दर्शन छात्रों को उन कक्षाओं में आने के पूर्व कभी होते भी हैं या नहीं।

हमारी क्षेत्रीय भाषाएँ राजस्थानी साहित्य पर सदैव व करती रहें, परन्तु उसकी कोई रचना हिन्दी की प्रारम्भिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में कभी नहीं रहती। तब यकायक आगे चलकर एम.ए. में चन्दवरदाई को कैसे समझा जाय? बेलि क्रिसन..... रुकमिनी री जैसी मधुर एवं अमर रचना के कवि का नाम भी क्या माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थी वता सकते हैं ? मैथिल कोकिल विद्यापति की

सरस बसन्त समय भलि पावल दछिन पवन बहि धीरे।
सपनेहु रूप वचन इक भाखिय मुख तें दूर करु चीरे।

तोहर बदन सम चंद होअय नहीं कैयो जतन वह केला। पुनि पुनि काटि बनावल नव के तैयो तुलित नहीं भेला। लोचन तू, कमल सक भे नहिं, से ज के नहिं जाने। से पुनि जाय लुकैलन्ह जाल भये पुनि पंकज निज अपमाने

(हे प्रेयसी, बसन्त का समय है, मलयानिल बह रहा है, घूंघट खोलकर एक वचन बोल दे, तेरे मुख के समान बनने की चेष्टा चन्द्र निरन्तर करता रहता है, बार बार अपने को तेरे मुख जैसा

बनाता है, पूर्णिमा को मिलन करता है जब वैसा नहीं पाता तो मिटाकर फिर बनाता है तो भी तुल्य न हो पाया। कमलों ने तेरे लोचनों सा होना चाहा, न होने पर अपमान के मारे पानी में जाकर छिप गये – चुल्लू भर पानी में डूब गये !!

इन रसीली पंक्तियों को पढ़कर पढ़ने वाला क्या मन मसोसकर रह जाता होगा, कि ऐसे कवि के अध्ययन का अवसर उसे इससे पहले क्यों न दिया गया ? माध्यमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में यदाकदा और सो भी एक आध स्वीकृत पाठ्य पुस्तक में उनको स्थान मिल जाता है। नहीं तो सीधे विश्वविद्यालय में ही उनसे 'मुलाकात' होती है से भी परीक्षा भर के लिए !!

ऐसी दमित इन क्षेत्रीय बोलियों के उत्तरोत्तर विकास करते रहने की गुंजाइश कहाँ है ? प्रकाशक आज उन्हीं पुस्तकों को लेते हैं, जो पाठ्यक्रम से सम्बन्धित होने के कारण पर्याप्त संख्या में बिक सकें। मासिक,साप्ताहिक अथवा दैनिक पत्र–पत्रिकाओं में भी कहीं ऐसी प्रवृत्ति नहीं पायी जाई, जो उनके साहित्य–सम्वद्ध न के लिए अनुकूल हो। पठन–पाठन और प्रचार दोनों के लिए दरवाजे खुले न होने पर भी, ब्रजभाषा, बुन्देली, भोजपुरी और अवधी आदि अपने–अपने क्षेत्र में आज भी अपने जीवन्त रूप में होने की घोषणा कर रही हैं, यह उनकी अक्षय आंतरिक इतिहास परिणाम और पुष्ट प्रमाण है। किन्तु भाषाओं को उनकी आन्तरिक शक्ति पर अपनी जिन्दगी जीने और अपनी मौत मरने के लिए छोड़ देना जीवित जाति के लिए आत्महत्या करने के समान है। जिस उत्कृष्ट घड़ी में चौबीस घंटे बाद चाभी लगाना आवश्यक हो वह कभी–कभी भूल से यथासमय चाभी न लगाने पर भी थोड़ी देर चलती रहती है, परन्तु कितने समय तक ?

समस्त साहित्यकारों का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट करने के साथ–साथ इन जनपदीय कवियों और उनके उन्नायकों से भी निवेदन किये बिना न रहेंगे कि वे नयी विचारधारा को अपनाते हुए अपनी कृतियों के स्तर को खड़ी बोली के समकक्ष लाकर उसके बराबर बनाये रखने का प्रयत्न निरन्तर करते रहें। उनके काव्य–निधि की संरक्षा का भार समस्त साहित्यिक समाज पर है और उन्हें समान अवसर दिलाने का कर्तव्य भी सभी सम्बन्धित व्यक्तियों तथा वर्गों का है, परन्तु हिन्दी–साहित्य की प्रगति में समयानुकूल उचित योग देते रहने की जिम्मेवारी तो जनपदीय लेखकों तथा कवियों पर है। हिन्दी साहित्याकाश में खड़ी बोली यदि नवोदित सूर्य के समान है तो क्षेत्रीय भाषाएँ चन्द्र तथा नक्षत्रों को भी अपनी चमक दमक दिखाने का मौका मिलना चाहिए। कहीं वे फीके न पड़ जायें। किसी उर्दू कवि के शब्दों में

'चाँद तारो, तुम अगर शरमाओगे,
वक्त से पहले सहर हो जायगी।

है। दुःख और आश्चर्य होता है जब उच्च कक्षा के छात्र ब्रज या अवधी की उत्कृष्टतम रचना की अनुभूति और समझ के साथ नहीं

पढ़ पाते। इसमें प्राध्यापक का भी दोष नहीं। इसके लिए निश्चय ही उत्तरदायी है वे लोग जिन्हें यह नहीं सूझा कि जिन कवियों की कृतियों को हमें विश्वविद्यालयों की उच्चातिउच्च कक्षाओं में पढ़वाना है। उनके दर्शन छात्रों को उन कक्षाओं में आने के पूर्व कभी होते भी हैं या नहीं।

हमारी क्षेत्रीय भाषाएँ राजस्थानी साहित्य पर सदैव व करती रहेंगी परन्तु उसकी कोई रचना हिन्दी की प्रारम्भिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में कभी नहीं रहती। तब यकायक आगे चलकर एम.ए. में चन्दवरदाई को कैसे समझा जाय ? बेलि क्रिसन..... रुकमिनी री जैसी मधुर एवं अमर रचना के कवि का नाम भी क्या माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थी बता सकते हैं ? मैथिल कोकिल विद्यापति की

सरस बसन्त समय भलि पावल दछिन पवन बहि धीरे। सपनेहु रूप वचन इक भाखिय मुख तें दूर करु चीरे। तोहर बदन सम चंद होय नहिं कैयो जतन वह केला। पुनि पुनि काटि बनावल नव के तैयो तुलित नहिं भेला। लोचन तू, कमल सक भे नहिं, से ज के नहि जाने। से पुनि जाय लुकैलन्ह जाल भयें पंकज निज अपमाने

(हे प्रेयसी, बसन्त का समय है, मलयानिल बह रहा है, घूंघट खोलकर एक वचन बोल दे, तेरे मुख के समान बनने की चेष्टा चन्द्र निरन्तर करता रहता है, बार बार अपने को तेरे मुख जैसा बनाता है, पूर्णिमा को मिलन करता है जब वैसा नहीं पाता तो मिटाकर फिर बनाता है तो भी तुल्य न हो पाया। कमलों ने तेरे लोचनों सा होना चाहा, न होने पर अपमान के मारे पानी में जाकर छिप गये – चुल्लू भर पानी में डूब गये !!

इन रसीली पंक्तियों को पढ़कर पढ़ने वाला क्या मन मसोसकर रह जाता होगा, कि ऐसे कवि के अध्ययन का अवसर उसे इससे पहले क्यों न दिया गया ? माध्यमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में यदाकदा और सो भी एक आध स्वीकृत पाठ्य पुस्तक में उनको स्थान मिल जाता है। नहीं तो सीधे विश्वविद्यालय में ही उनसे 'मुलाकात' होती है से भी परीक्षा भर के लिए !!

ऐसी दमित इन क्षेत्रीय बोलियों के उत्तरोत्तर विकास करते रहने की गुंजाइश कहाँ है ? प्रकाशक आज उन्हीं पुस्तकों को लेते हैं, जो पाठ्यक्रम से सम्बन्धित होने के कारण पर्याप्त संख्या में बिक सकें। मासिक, साप्ताहिक अथवा दैनिक पत्र–पत्रिकाओं में भी कहीं ऐसी प्रवृत्ति नहीं पायी जाई, जो उनके साहित्य– सम्वर्द्ध न के लिए अनुकूल हो। पठन–पाठन और प्रचार दोनों के लिए दरवाजे खुले न होने पर भी, ब्रजभाषा, हिन्दी और उसकी क्षेत्रीय बोलियाँ

इतिहास संस्कृति तथा साहित्य की सत्ता उनके अपने–अपने क्रमिक विकास पर ही आधारित होती है। उनके वर्तमान स्वरूप में उनके पूर्व–रूप का विकास होना चाहिए, विनाश नहीं। उनके अतीत, वर्तमान तथा भविष्य के रूप एक–दूसरे के पूरक होकर संबध्द हों,असम्बद्ध नहीं। क्या ऐसा होना उन्नति या विकास कहा जायगा, जिससे इस बात की संभावना पैदा हो कि हमारी भावी सन्तान किसी दिन महाराज हरिश्चन्द्र, दिलीप, अशोक, विक्रमादित्य या हर्ष को अपने ऐतिहासिक पुरुष, कर्मफल और पुनर्जन्म के सिद्धान्त, गो सेवा, पातिव्रत तथा अतिथि–सत्कार को अपनी संस्कृति के अंग एवं चन्दवरदाई, विद्यापति, सूर, तुलसी, मीरा, रसखान, रहीम, केशव, बिहारी, देव, पद्माकर और घाघ को अपनी भाषा के कवि कहने और समझनें में भी कठिनाई का अनुभव करें ?

खेद है कि साहित्य के क्षेत्र में तो वह दिन निकट आता प्रतीत होने लागता है। जब हम ब्रजभाषा, बुन्देली, अवधी और भोजपुरी आदि में रचना करने वाले उन सुयोग्य कवियों को भी न समझ पायेंगे, जिनके साहित्य द्वारा हमारी संस्कृति और इतिहास के तथ्य मानव–जीवन की विविध अनुभूतियों और समस्त आदर्शों के साथ जन–जन के जीवन में घुलमिल गये हैं और जिनका काव्य आज हिन्दी का प्रतिनिधि बनकर विश्व साहित्य के समक्ष बड़े गर्व और गौरव के साथ रखा जाता है।

हमारे साहित्य जगत में जो हवा बह रही है वह हिन्दी भाषा के उस साहित्य से वर्तमान साहित्य का साथ छुड़वाती सी दीख पड़ती है। कारण स्पष्ट है, खड़ी बोली वाला रूप ही हिन्दी मान लिया गया है और वीरगाथा, भक्ति तथा रीतिकालीन साहित्य सर्वांशतः हिन्दी के जिन रूपों में लिखा गया है, वे क्षेत्रीय भाषाएँ समझी जाने लगी हैं। प्रथम दौड़ में अन्य सभी पीछे छूटती जा रही हैं। खड़ी बोली की आशातीत उन्नति और सर्वतोन्मुखी समृद्धि निस्सन्देह हमारे सौभाग्य की सूचक है।

परन्तु 'समग्र' पर दृष्टिपात करते ही हमारा माथा उनके बिना नही रहता और हमें चिन्ता होने लगती है कि जिस साहित्य में, उसकी वास्तविक उन्नति या प्रगति के हेतु उसके 'पूर्व रूप का विकास' होना अनिवार्य हैं वहाँ 'विकास के स्थान पर उपेक्षा की जा रही है और हम आँख बन्द किये साहित्य को उसके सभी अंगों के 'क्रमिक विकास' वाले मार्ग से दूर लिये जा रहे हैं, जहाँ पहुँच कर वह अपनी यथार्थता खोये बिना न रहेगा।

बुन्देली, भोजपुरी और अवधी आदि अपने–अपने क्षेत्र में आज भी अपने जीवन्त रूप में होने की घोषणा कर रही हैं, यह उनकी अक्षय आंतरिक इतिहास परिणाम और पुष्ट प्रमाण है। किन्तु भाषाओं को उनकी आन्तरिक शक्ति पर अपनी जिन्दगी जीने और अपनी मौत मरने के लिए छोड़ देना जीवित जाति के लिए आत्महत्या करने के समान है। जिस उत्कृष्ट घड़ी में चौबीस घंटे बाद चाभी लगाना आवश्यक हो वह कभी–कभी भूल से यथासमय चाभी न लगाने पर भी थोड़ी देर चलती रहती है, परन्तु कितने समय तक ?

समस्त साहित्यकारों का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट करने के साथ–साथ इन जनपदीय कवियों और उनके उन्नायकों से भी निवेदन किये बिना न रहेंगे कि वे नयी विचारधारा को अपनाते हुए अपनी कृतियों के स्तर को खड़ी बोली के समकक्ष लाकर उसके बराबर बनाये रखने का प्रयत्न निरन्तर करते रहें। उनके काव्य–निधि की संरक्षा का भार समस्त साहित्यिक समाज पर है और उन्हें समान अवसर दिलाने का कर्तव्य भी सभी सम्बन्धित व्यक्तियों तथा वर्गों का है, परन्तु हिन्दी–साहित्य की प्रगति में समयानुकूल उचित योग देते रहने की जिम्मेवारी तो जनपदीय लेखकों तथा कवियों पर है। हिन्दी साहित्याकाश में खड़ी बोली यदि नवोदित सूर्य के समान है तो क्षेत्रीय भाषाएँ चन्द्र तथा नक्षत्रों को भी अपनी चमक दमक दिखाने का मौका मिलना चाहिए। कहीं वे फीके न पड़ जायें। किसी उर्दू कवि के शब्दों में

'चाँद तारो, तुम अगर शरमाओगे,
वक्त से पहले सहर हो जायगी।

भारत–भारती–भागीरथी के इस विपुल प्रवाह का बहुत कुछ श्रेय उसकी सहायक नदियों, इन क्षेत्रीय बोलियों को ही है। यह जानकारी भी उनके महत्त्व और उनकी निरन्तरता को कायम रखने के लिए हम क्या कर रहे हैं ? समय चाहे जितना बदले भारतीय हृदयों में जिन भावनाओं का बहिष्कार कभी भी नहीं हो सकता उनकी प्रेरणाओं का अमर सरोत ये उपभाषाएँ हैं, यह बात प्रत्येक हिन्दी साहित्यसेवी के मन से कभी न उतरना चाहिए।

ब्रज, अवधी, बुन्देली, भोजपुरी आदि उसकी क्षेत्रीय भाषाएँ खड़ी बोली की ही भाँति हिन्दी के शरीर की शिराएँ हैं और उनका समवेत साहित्य उसका प्राण वायु है, जिसके बिना उसका कोमल कान्त और कमनीय कलेवर कालान्तर में निर्जीव सा हो जायगा इसमें सन्देह नहीं। शरीर के विविध अंगोपांगों के साथ–साथ समुचित विकास पर ध्यान न देकर अंग विशेष, पर ही समस्त शक्ति केन्द्रित कर विकसित करने की चेष्टा अन्ततोगत्वारो की ओर ले जाती है, स्वास्थ्य की ओर नहीं। केवल खड़ी बोली और उसकी सन्तति गद्य को ही 'सर्वस्व' समझ हमारे साहित्यकार क्षेत्रीय भाषाओं की उपेक्षा करते हुए चलते रहे तो वे 'पेड़ काटि तकें

पल्लव सींचा' वाली उक्ति भले ही चरितार्थ न करें, परन्तु वे अपने को उस माली के समान सिद्ध तो कर ही देंगे; जिसने केवल गुलाब की नयी पौध के पोषण-परिवद्ध र्न करते रहने की धुन में अन्य द्रुम लताओं को न सींचकर उद्यान की संज्ञा ही बदल दी। एक क्यारी सींची शे, उपवन सुखा दिया।

अस्तु निष्पक्ष भाव से यदि गम्भीरतापूर्वक सोचें तो हम अनुभव करेंगे कि हिन्दी के अत्यन्त महत्वपूर्ण अंगों, क्षेत्रीय बोलियों के प्रति उदासीनता या उपेक्षा की नीति किसी दिन घातक सिद्ध होगी। उन्हें साथ लेकर न चलने से एक तो वे स्वयं पनप न सकेंगी दूसरे उनके व्यापक रूप में पठन-पाठन के रुक जाने पर हिन्दी हमारी सहस्राब्दियों पुरानी सभ्यता, संस्कृति, धर्म, समाज-व्यवस्था तथा राजनीति की सतरंगी झलक न रहेगी, जिससे विहीन उस साहित्य को हम अपना सच्चा प्रतिनिधि करने की स्थिति में न रहेंगे। उस भयावह स्थिति और अपने प्रतिनिधित्व से रहित उस साहित्य की कल्पना मात्र हमारे लिए रोमांचकारी है।

विगत वर्षों में क्षेत्रीय बोलियों की जो उपेक्षा हुई है उसका ही परिणाम यह है कि आज का छात्र इनकी मधुरतम रचनाओं का यथेष्ट रसास्वादन कर सकने में असमर है। इसका कारण यह भी है कि उसे इनके साहित्य के दर्शन अपनी पाठ्य पुस्तकों के कतिपय पृष्ठों के अतिरिक कहीं अन्यत्र होते ही नहीं। अपनी कक्षाओं के बाहर हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के पढ़ने से भी जो द्विषयक सहायक योग्यता आनी चाहिए वह भी इसलिए आ पाती कि वहाँ भी इन उपेक्षित जनपदीय भाषाओं की पूछ नहीं। विगत पीढ़ियों के लोग विधिवत अध्ययन किए बिना भी अपने पुराने कवियों की रचनाएँ जिस सरलता और स्पष्टता से समझ लेते हैं, उस प्रकार आज का नवयुवक नहीं समझ पाता।

जरा मुस्कराईए

- सुगंधा चतुर्वेदी, लखनऊ

हम पति-पत्नी के बीच हर समय झगड़ा क्यों होता रहता है, मुझे तो समझ नहीं आता। यदि आप समझ जाएं तो मुझे भी समझाइयेगा।

किस्सा नं. (1) मैं TV पर फिल्म देख रहा था। बाजार से लौटी मेरी पत्नी ने पूछा- क्या देख रहे हो...???

TV पर पड़ी हुई धूल मैंने उत्तर दिया।

तुरंत झगड़ा शुरू हो गया

(2) मेरी पत्नी ने कहा- आज महंगी चीजें बिकने वाली किसी जगह ले चलो।

मैं उसे पेट्रोल-पम्प पर ले गया और झगड़ा शुरू हो गया।

(3) सर्राफा-बाजार से गुजरते हुए मेरी पत्नी ने कहा- मेरा गले के लिए कुछ दिला दो।

मैंने तुरंत एक केमिस्ट से स्ट्रेपसिल्स का पत्ता लेकर दे दिया और हमारा झगड़ा शुरू हो गया।

(4) एक दिन कार से कहीं घूमने के लिए जाते हुए मेरी पत्नी बोली- आज कहीं ऐसी जगह ले चलो जहां मैं बहुत समय से ना गई होउं। मैं उसे अपनी मां के घर ले गया और उसका मेरा झगड़ा शुरू हो गया।

(5) एक दिन पत्नी बोली- सामने वाले शर्मा जी ऑफिस से आते ही मिसेज शर्मा को गले लगते हैं, आप ऐसा क्यों नहीं करते...???

कर तो दूं.. मगर मिसेज शर्मा यदि बुरा मान गयी तो...!!

मैंने जैसे ही कहा, हमारा झगड़ा..!

सोचिए तो दिल बोले -

*ये शादी नहीं आसान ,

बस इतना समझ लीजिए*

*हरी मिर्च की टॉफी है ,

और चूस कर खानी है*

आंतरिक- महाभारत

- उदिता चतुर्वेदी, लखनऊ

शास्त्र कहते हैं कि अठारह दिनों के महाभारत युद्ध में युद्ध के अंत में, संजय कुरुक्षेत्र के उस स्थान पर गए जहां संसार का सबसे महानतम युद्ध हुआ था। उसने इधर उधर देखा और सोचने लगा कि क्या वास्तव में यहीं युद्ध हुआ था? यदि यहां युद्ध हुआ था तो जहां वो खड़ा है, वहां की जमीन रक्त से सराबोर होनी चाहिए। क्या वो आज उसी जगह पर खड़ा है जहां महान पांडव और कृष्ण खड़े थे? तभी एक वृद्ध व्यक्ति ने वहां आकर धीमे और शांत स्वर में कहा, आप उस बारे में सच्चाई कभी नहीं जान पाएंगे!

संजय ने धूल के बड़े से गुबार के बीच दिखाई देने वाले भगवा वस्त्रधारी एक वृद्ध व्यक्ति को देखने के लिए उस ओर सिर को घुमाया। मुझे पता है कि आप कुरुक्षेत्र युद्ध के बारे में पता लगाने के लिए यहां हैं, लेकिन आप उस युद्ध के बारे में तब तक नहीं जान सकते, जब तक आप ये नहीं जान लेते हैं कि असली युद्ध है क्या? बूढ़े आदमी ने रहस्यमय ढंग से कहा। तुम महाभारत का क्या अर्थ जानते हो? तब संजय ने उस रहस्यमय व्यक्ति से पूछा। वह कहने लगा, महाभारत एक गाथा मात्र नहीं है, एक वास्तविकता भी है, निश्चित रूप से एक दर्शन भी है।

क्या आप मुझे बता सकते हैं कि दर्शन क्या है? संजय ने निवेदन किया। अवश्य जानता हूं, बूढ़े आदमी ने कहना शुरू किया। पांडव कुछ और नहीं, बल्कि आपकी पाँच इंद्रियाँ हैं; दृष्टि, गंध, स्वाद, स्पर्श और श्रवण। और क्या आप जानते हैं कि कौरव क्या हैं? उसने अपनी आँखें संकीर्ण करते हुए पूछा।

कौरव ऐसे सौ तरह के विकार हैं, जो आपकी इंद्रियों पर प्रतिदिन हमला करते हैं लेकिन आप उनसे लड़ सकते हैं और जीत भी सकते है। पर क्या आप जानते हैं कैसे?

संजय ने फिर से न में सर हिला दिया।

जब कृष्ण आपके रथ की सवारी करते हैं! यह कह वह वृद्ध व्यक्ति बड़े प्यार से मुस्कुराया और संजय अंतर्दृष्टि खुलने पर जो नवीन रत्न प्राप्त हुआ उस पर विचार करने लगा...

कृष्ण आपकी आंतरिक आवाज, आपकी आत्मा, आपका मार्गदर्शक प्रकाश हैं और यदि आप अपने जीवन को उनके हाथों में सौप देते हैं तो आपको फिर चिंता करने की कोई आवश्कता नहीं है। वृद्ध आदमी ने कहा।

संजय अब तक लगभग चेतन अवस्था में पहुंच गया था, लेकिन जल्दी से एक और सवाल लेकर आया। फिर कौरवों के लिए द्रोणाचार्य और भीष्म क्यों लड़ रहे हैं?

भीष्म हमारे अहंकार का प्रतीक हैं, अश्वत्थामा हमारी वासनाएं, इच्छाएं हैं, जो कि जल्दी नहीं मरतीं। दुर्योधन हमारी सांसारिक वासनाओं, इच्छाओं का प्रतीक है। द्रोणाचार्य हमारे संस्कार हैं। जयद्रथ हमारे शरीर के प्रति राग का प्रतीक है कि 'मैं ये देह हूं' का भाव। द्रुपद वैराग्य का प्रतीक हैं। अर्जुन मेरी आत्मा हैं, मैं ही अर्जुन हूं और स्वनियंत्रित भी हूं। कृष्ण हमारे परमात्मा हैं। पांच पांडव पांच नीचे वाले चक्र भी हैं, मूलाधार से विशुद्ध चक्र तक। द्रोपदी कुंडलिनी शक्ति है, वह जागृत शक्ति है, जिसके ५ पति ५ चक्र हैं। ओम शब्द ही कृष्ण का पांचजन्य शंखनाद है, जो मुझ और आप आत्मा को ढ़ाढ़स बंधाता है कि चिंता मत कर मैं तेरे साथ हूं, अपनी बुराइयों पर विजय पा, अपने निम्न विचारों, निम्न इच्छाओं, सांसारिक इच्छाओं, अपने आंतरिक शत्रुओं यानि कौरवों से लड़ाई कर अर्थात अपनी मेटेरियलिस्टिक वासनाओं को त्याग कर और चैतन्य पाठ पर आरूढ़ हो जा, विकार रूपी कौरव अधर्मी एवं दुष्ट प्रकृति के हैं।

श्री कृष्ण का साथ होते ही ७२००० नाड़ियों में भगवान की चैतन्य शक्ति भर जाती है, और हमें पता चल जाता है कि मैं चैतन्यता, आत्मा, जागृति हूं, मैं अन्न से बना शरीर नहीं हूं, इसलिए उठो जागो और अपने आपको, अपनी आत्मा को, अपने स्वयं सच को जानो, भगवान को पाओ, यही भगवद प्राप्ति या आत्म साक्षात्कार है, यही इस मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है।

ये शरीर ही धर्म क्षेत्र, कुरुक्षेत्र है। धृतराष्ट्र अज्ञान से अंधा हुआ मन है। अर्जुन आप हो, संजय आपके आध्यात्मिक गुरु हैं।

वृद्ध आदमी ने दुःखी भाव के साथ सिर हिलाया और कहा, जैसे जैसे आप बड़े होते हैं, अपने बड़ों के प्रति आपकी धारणा बदल जाती है। जिन बुजुर्गों के बारे में आपने सोचा था कि आपके बढ़ते वर्षों में वे संपूर्ण थे, अब आपको लगता है वे सभी परिपूर्ण नहीं हैं। उनमें दोष हैं। और एक दिन आपको यह तय करना होगा कि उनका व्यवहार आपके लिए अच्छा या बुरा है। तब आपको यह भी अहसास हो सकता है कि आपको अपनी भलाई के लिए उनका विरोध करना या लड़ना भी पड़ सकता है। यह बड़ा होने का सबसे कठिन हिस्सा है और यही वजह है कि गीता महत्वपूर्ण है। संजय धरती पर बैठ गया, इसलिए नहीं कि वह थका हुआ था, तक गया था, बल्कि इसलिए कि वह जो समझ लेकर यहां आया था, वो एक एक कर धराशाई हो रही थी। लेकिन फिर भी उसने लगभग फुसफुसाते हुए एक और प्रश्न पूछा, तब कर्ण के बारे में

आपका क्या कहना है? आह! वृद्ध ने कहा। आपने अंत के लिए सबसे अच्छा प्रश्न बचाकर रखा हुआ है।

कर्ण आपकी इंद्रियों का भाई है। वह इच्छा है। वह सांसारिक सुख के प्रति आपके राग का प्रतीक है। वह आप का ही एक हिस्सा है, लेकिन वह अपने प्रति अन्याय महसूस करता है और आपके विरोधी विकारों के साथ खड़ा दिखता है। और हर समय विकारों के विचारों के साथ खड़े रहने के कोई न कोई कारण और बहाना बनाता रहता है। क्या आपकी इच्छा; आपको विकारों के वशीभूत होकर उनमें बह जाने या अपनाने के लिए प्रेरित नहीं करती रहती है? वृद्ध ने संजय से पूछा। संजय ने स्वीकारोक्ति में सिर हिलाया और भूमि की तरफ सिर करके सारी विचार श्रंखलाओं को क्रमबद्ध कर मस्तिष्क में बैठाने का प्रयास करने लगा। और जब उसने अपने सिर को ऊपर उठाया, वह वृद्ध व्यक्ति धूल के गुबारों के मध्य कहीं विलीन हो चुका था। लेकिन जाने से पहले वह जीवन की वो दिशा एवं दर्शन दे गया था, जिसे आत्मसात करने के अतिरिक्त संजय के सामने अब कोई अन्य मार्ग नहीं बचा था।

सार्वजनिक विनम्र अपील*
17.12.2025

सम्मानीय बन्धुवर/बहिन जी
सादर पालागन

सजातीय बान्धवों को एक सांकेतिक सहयोग राशि रु 24000/- वार्षिक (रु. 2000/ - प्रति माह के अनुसार) से विगत कई वर्षों से श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा समाजहित के लिए, बांधवों के अमूल्य सहयोग से अन्नपूर्णा एवं छात्रवृत्ति सहायता अपने ही समाज के 44 परिवारों के मध्य प्रदान की जा रही है। वर्तमान में यह सहायता राशि त्रैमासिक अप्रैल, जुलाई,अक्टूबर तथा जनवरी के प्रथम सप्ताह सीधे उनके बैंक खाते हस्तांतरित की जा रही है। वित्तीय वर्ष 2025-26 की प्रथम किश्त 31 मार्च 2025 (अप्रैल 25) व द्वितीय किश्त (जुलाई 25) में पूर्व में लाभार्थियों के खाते में प्रेषित की जा चुकी है।

सहयोग राशि Rs. 2,56,200/- लाभार्थियों के - बैंक खातों में सीधे भेजी जाती है। सहयोग देने वाले बांधवों के नाम तथा उनके द्वारा प्रदत्त सहयोग राशि :-

26. श्रीमती नीतिका जी (गुरुग्राम) द्वरा- 2100/-
27. स्व. यतीश जी की स्मृति में श्री दिवस जी (लखनऊ) द्वारा - 5100/-
28. श्रीमती ज्योत्सना जी - (नोएडा) द्वारा -1100/-
29. श्री समीर चतुर्वेदी (इटावा) द्वारा - 1100/-
30. श्रीमती बीना मिश्रा (हैदराबाद) द्वारा - 1000/-
31. श्री मनोज चतुर्वेदी (सागर) द्वारा - 2100/-
32. श्री माथुर चतुर्वेदी सभा गुरुग्राम द्वारा - 6000/-
33. स्व.श्री केदार नाथ जी (पूर्व सभापति,महासभा) की स्मृति में उनके परिवार द्वारा 1,00,000 34. श्री स्वयंभू जी, बैंगलोर द्वारा - 12000
35. स्व. ओंकार नाथ चतुर्वेदी, कानपुर की स्मृति में श्री विकास जी द्वारा - 1,00,000/- द्वारा
36. श्री अविनाश जी,कानपुर द्वारा 12000/-
37. श्री भुवन कुमार जी,गुरुग्राम द्वारा 36000/-38. श्री संजय मिश्रा जी, नोयडा 1100/-
39. Col. गौरव जी,लखनऊ 10200/-
40. श्री शेखर जी,इंदौर 5000/-
41. श्री अनुराग जी,गुरुग्राम 5000/-
42. श्री कृष्णकांत जी,लखनऊ 12000/-
43. गुप्त सहयोग 2500/-
44. डॉ. मनोज जी,ग्वालियर 12000
45. श्री सुदेश जी,जयपुर 1100/-
46. श्री रचित जी,झाँसी 12000/-
47. श्री रुचिर जी,झाँसी 12000/-
48. श्री मनोज जी,सागर 3000/-
49. स्व. श्री दयाशंकर चतुर्वेदी (कानपुर/होलीपुरा) की चतुर्थ पुण्य तिथि (17/10/25) पर उनके पुत्रों राजीव एवं संजीव रु. 24,000/-
50. श्री प्रवेश चतुर्वेदी, चाम्पा 1100/-
51. श्रीमती मंजुल जी, फरीदाबाद 1000/-
52. गुप्तदान 5000/-
53. श्री प्रवीण जी,लखनऊ 5000/-
54. श्री जयंत जी,लखनऊ 12000/-

कुल प्राप्त सहयोग राशि योग : **Rs. 13,11,901/-**

इस पुण्य कार्य में सहयोग के लिए सादर आग्रह है। सभी से बांधव तथा बहनों से करबद्ध निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में खुले हृदय से सहयोग देने की कृपा करें।

राशि स्थानातंरण के बाद उस राशि की सूचना निम्न नंबर पर अपने दूरभाष तथा email के साथ भेजने की कृपा करें।

निवेदक : शशांक चतुर्वेदी, मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, 9826086879

प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम 2021 (PMEGP loan Scheme 2021)

- डॉ. अजय चैबे

गतांक से आगे

PMEGP योजना 2021 के लाभ

- देश के बेरोजगार युवाओ को इस योजना के तहत अपना खुद का उद्योग ,रोजगार शुरू करने के लिए केंद्र सरकार की तरफ से 10 लाख से लेकर 25 लाख रूपये तक लोन प्रदान किया जायेगा।
- इस योजना के तहत देश के बेरोजगार युवाओ को उनकी जाति और इलाको के अनुसार सब्सिडी भी प्रदान की जाएगी।
- प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम योजना 2021 के अंतर्गत देश के शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रो के बेरोजगार युवाओ को लोन मुहैया कराया जायेगा।
- शहरी इलाके में PMEGP के लिए नोडल एजेंसी जिला उद्योग केंद्र (DIC) है, जबकि ग्रामीण इलाके में इसके लिए खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड (ज़टप्ब) से संपर्क किया जा सकता है।
- इस योजना का लाभ सिर्फ उन बेरोजगार युवाओ को प्रदना किया जायेगा जो स्वयं का रोजगार शुरू करना चाहते है।

PMEGP Scheme 2021 किस तरह के उद्योग लगा सकते है

- वन आधारित उद्योग
- खनिज आधारित उद्योग
- खाद्य उद्योग
- कृषि आधारित
- इंजीनियरिंग
- रसायन आधारित उद्योग
- वस्त्रोद्योग (खादी को छोड़कर)
- सेवा उद्योग
- गैर परम्परागत ऊर्जा

जाति/श्रेणी आवेदकों की सूची

- अनुसूचित जाति (एससी)
- भूतपूर्व सैनिक
- अनुसूचित जनजाति (एसटी)
- विकलांग
- अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी)
- उत्तर पूर्वी राज्य के लोग
- अल्पसंख्यक
- सीमावर्ती इलाकों और पहाड़ियों में रहने वाले लोग
- महिलाएं

PMEGP योजना 2021 की पात्रता

- आवेदक भारतीय निवासी होना चाहिए।
- इस योजना के अंतर्गत आवेदक की आयु 18 वर्ष से अधिक होनी चाहिए।
- PMEGP loan Scheme 2021 के तहत आवेदनकर्ता कम से कम 8 वी पास होना चाहिए।
- इस योजना के तहत नया बिजनेस शुरू करने के लिए भी यह लोन दिया जाएगा। पुराने बिजनेस को आगे बढ़ाने के लिए यह लोन नहीं दिया जाता है।
- वह व्यक्ति जिसने किसी सरकारी संस्थान से प्रशिक्षण लिया हो उसे इस योजना में पहले प्राथमिकता दी जायेगी।
- अगर आवेदक को पहले से किसी अन्य सब्सिडी योजना का लाभ मिल रहा हैं, उस स्थिती में भी वह प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम लोन योजना 2021 का लाभ लेने योग्य नहीं हैं।
- इस योजना का लाभ सहकारी संस्थान और धर्मार्थ संस्था को भी मिलेगा।

PMEGP loan Scheme 2021 के दस्तावेज

- आवेदक का आधार कार्ड
- पैन कार्ड
- जाति प्रमाण पत्र
- निवास प्रमाण पत्र
- शैक्षित योग्यता का प्रमाण पत्र
- मोबाइल नंबर
- पासपोर्ट साइज फोटो

इन विभिन्न चरणों के अंतर्गत प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम ऋण योजना के विभिन्न आयामों को आगे अंक में प्रेषित करेंगे। इच्छुक पाठक पूर्ण विवरण के लिए ई-मेल nikitachaturvedi17@gmail.com पर संपर्क करे।

समाज की प्रतिभा

प्रभात खबर के प्रधान संपादक आशुतोष चतुर्वेदी बने केंद्रीय सूचना आयुक्त!

आशुतोष चतुर्वेदी एक प्रतिष्ठित और वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो वर्तमान में 'प्रभात खबर' के प्रधान संपादक के रूप में कार्यरत हैं। उनके पास मीडिया जगत में लगभग चार दशकों का गहन अनुभव है, जिससे वे हिंदी पत्रकारिता के अनुभवी और विशेषज्ञ पत्रकारों में माने जाते हैं। आशुतोष चतुर्वेदी का संबंध एक पत्रकारिता परिवार से है। वे प्रसिद्ध पत्रकार पद्मश्री पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी के परिवार से ताल्लुक रखते हैं, जिन्होंने महात्मा गांधी के सहयोगी के रूप में कार्य किया था। पंडित बनारसी दास को अपना प्रेरणास्रोत मानते हुए, आशुतोष चतुर्वेदी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में कदम रखा और इसमें उल्लेखनीय योगदान दिया।

हिंदी पत्रकारिता के वरिष्ठ और अनुभवी पत्रकार आशुतोष चतुर्वेदी सुपुत्र डॉ. महेश चंद्र चतुर्वेदी (फिरोजाबाद/रांची) को केंद्रीय सूचना आयुक्त नियुक्त किया गया है। उन्होंने 15 दिसंबर से अपने नए पद का कार्यभार संभाला। वर्तमान में वे देश के प्रतिष्ठित हिंदी दैनिक प्रभात खबर के प्रधान संपादक हैं।

आशुतोष चतुर्वेदी को मीडिया जगत में तीन दशकों से अधिक का अनुभव है। वे हिंदी पत्रकारिता के उन चुनिंदा नामों में शामिल हैं, जिन्होंने प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और डिजिटल मीडिया—तीनों माध्यमों में सक्रिय और प्रभावी भूमिका निभाई है। भारत के साथ-साथ विदेशों में भी उन्होंने पत्रकारिता का व्यापक अनुभव हासिल किया है। अपने लंबे करियर के दौरान उन्होंने इंडिया टुडे और संडे ऑब्जर्वर जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में कार्य किया। इसके अलावा बीबीसी हिंदी से जुड़कर उन्होंने ऑनलाइन पत्रकारिता को भी मजबूती दी। वे अमर उजाला (नोएडा संस्करण) में कार्यकारी संपादक के पद पर भी अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

आशुतोष चतुर्वेदी प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के साथ एक दर्जन से अधिक देशों की विदेश यात्राओं का हिस्सा रहे हैं। इस दौरान उन्हें अंतरराष्ट्रीय राजनीति, कूटनीति और वैश्विक घटनाक्रमों को नजदीक से देखने-समझने का अवसर मिला। वे वर्तमान में एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के सदस्य भी हैं।

केंद्रीय सूचना आयुक्त के रूप में उनकी नियुक्ति को सूचना के अधिकार, पारदर्शिता और जवाबदेही के क्षेत्र में एक अहम कदम माना जा रहा है। मीडिया और प्रशासन—दोनों क्षेत्रों में उनके अनुभव से इस संवैधानिक संस्था को मजबूती मिलने की उम्मीद जताई जा रही है।

समस्त चतुर्वेदी समाज उनकी इस उपलब्धि पर गौरांवित है।

हम उनके सुखद वह उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

अपने करियर की शुरुआत उन्होंने इलाहाबाद से प्रकाशित प्रसिद्ध समाचार पत्रिका 'माया' से प्रशिक्षु पत्रकार के रूप में की थी। इसके बाद उन्होंने इंडिया टुडे, संडे ऑब्जर्वर, जागरण, बीबीसी लंदन और दिल्ली जैसे प्रतिष्ठित मीडिया संस्थानों में कार्य किया। उनकी उत्कृष्टता और समर्पण ने उन्हें अमर उजाला के कार्यकारी संपादक और अंततः 'प्रभात खबर' के प्रधान संपादक के पद तक पहुँचाया। आशुतोष चतुर्वेदी को भारत और विदेशों में पत्रकारिता का व्यापक अनुभव है, और उन्होंने प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के साथ एक दर्जन देशों की यात्रा भी की है।

वर्तमान में वे एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के सदस्य हैं, जहां वे भारतीय पत्रकारिता के मानकों को ऊंचा उठाने और उसे दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

– **शशांक चतुर्वेदी,** प्रकाशक
चतुर्वेदी चंद्रिका

साधु का आशीर्वाद

- नीरज चतुर्वेदी, सिकंदरपुर खास

एक दिन महर्षि नारद, वीणा बजाते हुए:
नारायण नारायण—वैकुंठ की ओर जा रहे थे।
रास्ते में एक औरत मिली। चेहरा मुरझाया हुआ, आँखों में खालीपन, आवाज़ सुनाई दी :
मुनिवर मेरे आँचल में आज तक कोई बच्चा नहीं खेला
आप तो भगवान से मिलते हैं ज़रा उनसे पूछिए
मेरी गोद कब भरेगी?
नारदजी ने करुणा से देखा:
ठीक है माता, मैं पूछूँगा।
और आगे बढ़ गए।
वैकुंठ में भगवान ने हँसकर स्वागत किया,
आओ नारद! कुशल मंगल?
नारद बोले:
प्रभु, एक औरत मिली थी बड़ी व्याकुल थी पूछ रही थी—औलाद कब होगी?
भगवान का मुख गंभीर हो गया:
नारद, उसके भाग्य में संतान का योग नहीं है।
उसे कह देना।
वापसी पर नारदजी लौटे तो वही स्त्री दूर से दौड़ी आई
आँखों में आशा की चमक
क्या कहा प्रभु ने?
नारदजी का उत्तर वज्र की तरह गिरा:
माता भगवान ने कहा है कि तुम्हें संतान का सुख नहीं मिलेगा।
और वहाँ सन्नाटा छा गया।
स्त्री की पैरों से मानो धरती खिसक गई।
वह फूट- फूटकर रोने लगी।
नारदजी चुपचाप आगे बढ़ गए।
समय बीता
एक दिन उसी गाँव में एक साधु आया।
उसने पुकार लगाई:
जो मुझे एक रोटी देगा,
उसे मैं एक नेक संतान दूँगा!
वह बाँझ स्त्री, जिसकी आँखें अभी भी हर बच्चे को देखकर भर आती थीं-
तेजी से भागी, रोटी बनाई, और साधु के सामने रख दी।
साधु मुस्कराया:
तुम्हारी गोद जरूर भरेगी।
और हुआ भी ऐसा ही।
वर्षों बाद घर में एक सुंदर पुत्र जन्मा।
ढोल बजने लगे, दीप जल उठे, औरत खुशी से नाच उठी
जिस घर में सन्नाटा था, वहाँ अब किलकारियाँ थीं।
वर्षों बाद नारदजी फिर उसी मार्ग से गुज़रे।
वह स्त्री अपने पुत्र को गोद में लिए मुस्कराती हुई बोली:
नारदजी!
आपने कहा था मेरे भाग्य में संतान नहीं
देखिए, ये मेरा लाल!
एक साधु ने आशीर्वाद दिया था
और ईश्वर ने दे भी दिया।
नारद चकित रह गए।
यह कैसे सम्भव है?
प्रभु, आपने कहा था उसके भाग्य में संतान नहीं
तो फिर यह सब कैसे हुआ?
क्या वह साधु आपसे अधिक शक्तिशाली था?
भगवान मुस्कराए नहीं
बल्कि बोले:
नारद, मेरी तबियत ठीक नहीं।
एक औषधि चाहिए:
भूलोक से एक कटोरी मानव—रक्त ले आओ।
नारद हतप्रभ रह गए
फिर पृथ्वी पर उतरे।
घर—घर गए
पर कोई रक्त देने तैयार नहीं हुआ।
लोग उपहास उड़ाने लगे:
भगवान बीमार हैं?
अरे जाओ जाओ!
नारद थककर जंगल में पहुँचे।
वहीं वह साधु मिला।
साधु बोला:
नारदजी! जंगल में क्या कर रहे हैं?
नारद लाचार स्वर में बोले—
प्रभु ने एक कटोरी मानव—रक्त माँगा है

साधु एक क्षण भी न हिचकिचाया।
कहाः छुरी दीजिए।
और बिना कोई शब्द कहे,
अपने शरीर से रक्त निकालकर कटोरी भर दी।
नारद स्तब्ध रह गए।
उस रक्त को लेकर वे वैकुंठ पहुँचे।
भगवान ने कटोरी ली और बोलेः
नारद, यही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है।
जिस साधु ने मेरे लिए अपने प्राणों का रक्त देने में
एक क्षण भी नहीं सोचा
क्या उसके चाहने पर मैं किसी को संतान नहीं दे सकता?
और तुम
तुम्हारे शरीर में भी रक्त था,
पर तुमने एक बूँद भी नहीं दी।
भाग्य बदलता है।
प्रेम से,
बलिदान से,
सद्भाव से,
और सच्चे आशीर्वाद से।

मनुष्य का भाग्य केवल प्रारब्ध से नहीं बनता—
उसके कर्म, उसकी करुणा,
और दूसरे के लिए बहाया गया एक क़तरा प्रेम भी
भाग्य को बदलने की शक्ति रखता है।।

ईश्वर का शुक्रिया

-जिगिषा चतुर्वेदी, दिल्ली

1. टायर चलने पर घिसते हैं, लेकिन पैर के तलवे जीवनभर दौड़ने के बाद भी नए जैसे रहते हैं।
2. शरीर 75% पानी से बना है, फिर भी लाखों रोमकूपों के बावजूद एक बूंद भी लीक नहीं होती।
3. कोई भी वस्तु बिना सहारे नहीं खड़ी रह सकती, लेकिन यह शरीर खुद को संतुलित रखता है।
4. कोई बैटरी बिना चार्जिंग के नहीं चलती, लेकिन हृदय जन्म से लेकर मृत्यु तक बिना रुके धड़कता है।
5. कोई पंप हमेशा नहीं चल सकता, लेकिन रक्त पूरे जीवनभर बिना रुके शरीर में बहता रहता है।
6. दुनिया के सबसे महंगे कैमरे भी सीमित हैं, लेकिन आंखें हजारों मेगापिक्सल की गुणवत्ता में हर दृश्य कैद कर सकती हैं।
7. कोई लैब हर स्वाद टेस्ट नहीं कर सकती, लेकिन जीभ बिना किसी उपकरण के हजारों स्वाद पहचान सकती है।
8. सबसे एडवांस्ड सेंसर भी सीमित होते हैं, लेकिन त्वचा हर हल्की-से-हल्की संवेदना को महसूस कर सकती है।
9. कोई भी यंत्र हर ध्वनि नहीं निकाल सकता, लेकिन कंठ से हजारों फ्रीक्वेंसी की आवाजें पैदा हो सकती हैं।
10. कोई डिवाइस पूरी तरह ध्वनियों को डिकोड नहीं कर सकती, लेकिन कान हर ध्वनि को समझकर अर्थ निकाल लेते हैं।

ईश्वर ने हमें जो अमूल्य वस्तुएं दी हैं, उनके लिए उसका आभार मानिए और उससे शिकायत करने का हमें कोई अधिकार नहीं है। हर रोज़ सुबह हमारा जागना अपने आप में एक चमत्कार है! इसलिए उस सर्वशक्तिमान ईश्वर का धन्यवाद करें।

बसंत पंचमी

बसंत पंचमी का महत्व और परम्परा बहुत ही दिलचस्प है! बसंत पंचमी, जिसे सरस्वती पूजा भी कहा जाता है, माघ महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है, जो शुक्रवार 23 जनवरी 2026 को है। यह पर्व ज्ञान, कला और बुद्धि की देवी मां सरस्वती को समर्पित है ।

बसंत पंचमी का महत्व:

- यह पर्व वसंत ऋतु के आगमन का प्रतीक है और ज्ञान, कला व बुद्धि की देवी मां सरस्वती को समर्पित है।
- माना जाता है कि इसी दिन देवी सरस्वती का अवतरण हुआ था, जो ज्ञान, कला और बुद्धि की देवी हैं।
- यह दिन विद्यार्थियों, कलाकारों और किसानों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह ज्ञान और कला की शुरुआत का प्रतीक है।

बसंत पंचमी की परम्परा:

- इस दिन लोग पीले रंग के कपड़े पहनते हैं, जो ज्ञान और कला का प्रतीक है।
- सरस्वती पूजा की जाती है, जिसमें मां सरस्वती की प्रतिमा को पीले रंग के कपड़े से सजाया जाता है।
- इस दिन विद्यार्थी अपनी किताबें और पेन मां सरस्वती के चरणों में रखते हैं और उनका पूजन करते हैं।
- बसंत पंचमी के दिन अबूझ मुहूर्त होने के कारण बिना किसी मुहूर्त के नए कार्य की शुरुआत उत्तम मानी जाती है।

खोले के हनुमान जी- जयपुर

- राकेश चतुर्वेदी, (तरसोखर/ लखनऊ)

जयपुर प्रवास के दौरान खोले के हनुमान जी के दर्शन की प्रेरणा आखिर मन में प्रस्फुटित होने लगी और बजरंगबली ने एक प्रकार से दर्शन के लिए आमंत्रित किया, वाकई धार्मिक सिद्ध स्थानों पर ईश्वर की प्रेरणा और आमंत्रण से ही दर्शन का सौभाग्य पाया जा सकता है।

दिल्ली रोड पर स्थित अरावली पर्वत श्रखंला में चारो तरफ से घिरे लक्ष्मण डूंगरी पहाड़ी पर खोले के हनुमान जी का जाग्रत मंदिर जो प्रकृति के अनुपम सौंदर्य के बीच भक्तजनों के लिए अभूतपूर्व अनुभव को प्रदान करने का केंद्र के रूप में स्थापित है, बड़े विशाल क्षेत्र में फैले इस मंदिर की मान्यता जयपुर और आस पास के क्षेत्रों में भक्तों को आकर्षित करती रहती है।

इस धाम की स्थापना पंडित राधे लाल जी चौबे के द्वारा 1960 में बजरंग बली की प्रेरणा से हनुमत कृपा को आम भक्तों तक पहुचने के उद्देश्य से किया था ,राधे लाल जी ने अपने हनुमंत प्रेम की ऊर्जा से इस वीरान जंगली पहाड़ी स्थान से हनुमान विग्रह स्थापित कर छोटे से मंदिर को स्थापित किया, धीरे धीरे उनके अथक प्रयासों और भक्ति के समर्पण की बदौलत इस मंदिर ने एक विशाल रूप ले लिया है, जिसकी धार्मिक मान्यता तो है ही साथ ही धार्मिक आयोजनों और सामाजिक आयोजनों का भी यह उपयुक्त स्थल के रूप में स्थापित हो गया है।

भक्त शिरोमणि राधे लाल चौबे जी जो हमारे चतुर्वेदी समुदाय के रत्न के रूप में भक्ति धारा को समाज और हनुमंत प्रेमियों के दिलों में वह स्थान बनाया है,जो आज एक श्रद्धा पुरुष के रूप में स्थापित हो गए है-- कहा जाता है चतुर्वेदी समाज की जयपुर में आई प्रत्येक बारात को एक दिन दाल बाटी, चूरमा का स्वादिष्ट भोज इसी मंदिर प्रांगण में चौबे जी के सौजन्य से किया जाता था ! यह एक प्रकार से लोगों में भक्ति का संचार तो करता ही था साथ ही कन्या पक्ष को भी एक प्रकार से आर्थिक सहायता का एक स्वरूप था और समाज के प्रति दायित्व निर्बहन का प्रयास था आज से 27 बर्ष पूर्व अपने साले शशांक के विवाह में मैंने भी इस भोज का प्रसाद ग्रहण किया है, जिसका स्वाद आज भी जैसे पूरी तरह से मन में याद बन कर रह गया है।

दर्शन प्राप्त कर पुजारी जी से पूछने पर पता चला राधेलाल चौबे जी कुछ बर्ष पहले ईश्वर लोक को गमन कर चुके है और बारातों की भोज की प्रथा अब शायद नहीं चल रही है। परंतु मंदिर प्रांगण में बड़े बड़े हाल बुक करके दाल बाटी का आयोजन धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रमो के लिए किया जाता है, जिसके लिए मंदिर प्रवेश द्वार पर कई कैटरर्स अपनी सेवा प्रदान करने के लिए उपलब्ध है। मंदिर के संचालक टीम द्वारा बताया गया कि चौबे जी के पुत्र मंदिर के ट्रस्ट में शामिल है और अपनी सेवाएं प्रदान करते रहते है।

मंदिर में अनवरत रामचरितमानस का अखंड पाठ

चलता रहता है पंडित राधे लाल जी का योगदान उनके समर्पण त्याग ,भक्ति की बदौलत आज यह एक तीर्थ के रूप में स्थापित हो गया है। दिनों दिन मंदिर एक विशाल भव्य रूप लेता जा रहा है

मंदिर के सुरम्य वातावरण में कुछ बैठ कर दर्शन कर आत्मसंतुष्टि और असीम शांति का अनुभव हुआ।

इसी स्थान पर ऊंची पहाड़ी पर वैष्णोदेवी का मंदिर भी है जहां पर रोप वे द्वारा जाने की सुविधा उपलब्ध है।

खोले के हनुमान जी के दर्शन से मिली ऊर्जा और आंतरिक आनंद लिए जयपुर से आकर चल ही दिए

जो एक शानदार अनुभव लिए लंबे अरसे तक मन को आनंदित करती रहेगी। वाकई हम चतुर्वेदी जनों के लिए यह जाग्रत स्थान एक तीर्थ की तरह है।बजरंगबली की असीम कृपा से मंदिर का बिस्तार भक्तों के विशाल धार्मिक आयोजनों का केंद्र बने और भक्ति धारा हम सबके जीवन में प्रवाहित होकर

सदमार्ग प्रेम भाईचारा के भावों को जाग्रत करता रहेगा।

जय बजरंगबली की

चाट वाली गली के गोल गप्पे

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

"रमा शॉपिंग करते करते थक गये और भूख भी लगी है". "चलो चाट वाली गली *गोलगप्पे खाते है। - प्रेमा ने कहा, "हाँ प्रेमा, मुँह पानी आ गया", दोनों रेस्टोरेन्ट देखने लगी। कोई था ही नही। सभी तरफ चाट के ठेले। जिसमे गोलगप्पे महाराज काँच के शो केश में करीने से सजे बैठे थे। "चल प्रेमा खाते है रुका नही जा रहा सभी खा रहे है, गोलगप्पे का मजा ठेले पर है। लाइन से सभी खड़े है हाथ में दोना सबकी नजर ठेले वाले के हाथ पर किसको? मिलता है।

अरे! भाई!जल्दी जल्दी खिला कब से खड़े सूख रहे है।

"मैडम आपके पूरे हो गये दस रुपये के और खिलाऊं?

नही, पैसे छुट्टे देना

हां मेडम लीजिये दोना बढ़ाइये

भैया खट्टा मीठा खिलाओ थोड़ी मिर्च और लगा देना।

मेडम हींग के पानी खाइये तबीयत प्रसन्न हो ज़ायेगी

ऐ भैया!

घर जा रहे कब से खड़े है

दो खिला दिये।

ना इधर के ना उधर को

अरे! मेडम लीजिये इमली का पानी इन्तजार में मजा है।

ये झलक थी मेरी लोक प्रियता की।

और सुनो सब्जी मण्डी में सब्जी आवाज लगा कर बिकती है। फल मण्डी में फल। दूर से मालूम पड़ जाती है। सब्जी मण्डी

आलू से गोल घुइंयाँ है।

हाँ लाला कितनी तोलू

शुगर फ्री आलू ले लो

पर सुनो! मुझे आवाजें लगा के नही खिलाया जाता।

मैं गुपचुप हूं इसलिये सब चुपचाप खाते है, और ठेले पर खुद जाते है।

मैं हर जगह उपलब्ध हूँ, स्कूल, कालेज, बाजार, आफिस, कैन्टीन, अरे हाँ माँल में रेस्टेरेन्ट, होटल में मौजूद रहता हूँ।

हाँ एक जगह भूल गया गलर्स होस्टल के नीचे गुमटी में।

सभी दावत, किटी पार्टी में तो मिलता ही हूँ, मगर समय की बलिहारी मैं अब मृत्यु भोज में भी शामिल कर लिया गया।

मेरा जीवन क्षणिक ही होता है।मुझे दोहा याद आ रहा है।

"माली आवत देख के कलियन करी पुकार

फूली फूली चुन लयी काल हमारी वार

"अगर एक दिन बच गये तो दूसरे दिन परहितार्थ जाना है।

वैसे भी हमारे धर्म ग्रंथो में कहा गया है" आत्मा अजर अमर है शरीर मरता है आत्मा नहीं। मैं फिर दूसरे रूप में गोल गप्पा बन के आ जाता हूँ, ईश्वर इतनी कृपा करता है मुझे अन्य योनियों में नहीं भटकना पड़ता फिर से गोलगप्पा बन जाता हूँ।

वैसे तो मैं अल्पाहार ही हूँ लेकिन परिस्थिती वश पूर्ण आहार का स्थान ले लेता हूँ। कभी कभी मेरे चाहने वाले मुझे लालच एवं प्रेम के कारण अधिक ग्रहण कर लेते है तो बन जाता हूँ पूर्ण आहार। अधिकतर मेरे प्रशंसक मुझे बड़े प्रेम से अपनाते हैं। मैं अमीर- गरीब, नेता -अभिनेता, मंत्री- सन्तरी सभी को उपलब्ध हो जाती हूँ। मेरे बिना कोई भी पार्टी अधूरी रहती है। मेरे चाहने वालों की प्यासी आँखे मुझे तलाशती है मैं हूँ कहाँ ? मुझे तलाशने का कारण मेरा स्वादिष्ट एवं पाचक होना है। एक विशेष बात बताना भूल गयी। मैं अपने जुडवां सहोदर के साथ सदा रहती हूँ।सहोदर का साथ ही कारण मैं विशेष बनती हूँ। सहोदर मुझे इतनी चटपटी मजेदार बनाता है। अरे जरा सब्र करो बताती हूँ अपना नाम मैं हूँ पानीपूरी जिसे गोल गप्पे भी कहते हैं। मेरा नाम सुनते ही आ गया न मुँह में पानी। मेरे चाहने वाले सम्पूर्ण एशिया महाद्वीप में है। इन्ही चाहने वालों ने मेरा नामकरण किया। लीजिये सुनिये मेरे नाम फुलकी,पानी बतासे,गोल गप्पे, पुचका, गुपचुप फुस्की। मेरा जन्म कब हुआ मैं सबकी पसन्द कैसे बनी यह बताना मेरा कर्तव्य है। मुझे भी ज्ञात नही है मेरी उम्र क्या है लेकिन कुछ लोगो ने मेरा जन्म स्थान मगध राज्य बताया है, जो वर्तमान समय में बिहार में है। लगभग 400 साल पहले मेरी पहचान हो गयीं थी।उस समय मैं फुल्की थी।लेकिन प्रमाणित तिथी कोई नही, न मेरा, कोई आधार कार्ड न., वोटर लिस्ट में नाम यह मेरा दुर्भाग्य है कि इतने सालों में लोगो को खुश किया मुझे अपनाकर लुफ्त उठाया। पर चिन्ता किसी नही कि कोई दस्तावेज बनबा देते। जबकि लाखों लोगो के स्थायी दस्तावेज

बन गये जो अवैध रुप से भारत आये अरे भाई यह है वोट की राजनीति है। मैं यह पसन्द नही करती, पक्कडे जाओ तो हवा जेल की खाओ तथा बदनाम हो, जो मैंने सुना है अपने बुजुर्गों से वह आपको बताती हूँ,वो बताते है मैं भारतीय मूल का व्यंजन हूँ। चार सौ वर्ष पहले मगध राज्य में मेरा जन्म हुआ था 400

साल पूर्व में मैंने मान लिया। उसी समय एक किन्दवती मेरे सामने आयी।

मैं थोड़ी विचलित हो गयी।अमंजस में पड़ गयी। मन को समझा लिया। एक फर्क पड़ता है हूँ तो भारतीय। मुझे कौन सी नौकरी करनीं है,न कही प्रमाण देना है, आयु का जो हेर फेर का आरोप लगता।

मेरे जन्म के बारे में एक और

किन्दवन्ती है जो महाभारत काल से जुड़ी है। जन्म की कहानी एक रोचक है। पाँचो पाण्डव जब वनवास गये। उस समय खाद्य सामाग्री की कमी थी। एक दिन सामाग्री की कमी थी। आटा थोड़ा था तथा थोड़ी थोडी सब्जी थी। तब ने अपनी व्यंजन बनाने की दक्षता का उपयोग किया।द्रोपदी ने आटे से करारी पूड़ी बनायी तथा मसालेदार पानी बनाया तथा सभी सब्जी भर कर पानी भर कर पाँचो भाइयों को खिलायी जिससे नाम पड़ा पानी पूरी।

दूसरी किदवन्ती है,द्रोपदी जब विवाह के बाद ससुराल आयी तब कुन्ती ने उनकी पकवान सम्बधी परीक्षा ली। उन्होंने थोड़ा सा आटा दिया तथा कुछ बची हुई सब्जियाँ देकर स्वादिष्ट पकवान बनाने को कहा।

द्रोपदी भोजन बनाने में दक्ष थी।द्रोपदी ने आटे से छोटी छोटी करारी पूडियाँ तली। सारी सामाग्री मिला कर चोखा बनाया उसे पूड़ी में भरके मसालेदार पानी भरके खिलाया जो काफी स्वादिष्ट था उसी का नाम पानी पूरी था। उपरोक्त आधार पर मैं कह सकती हूँ। मैं महाभारत काल में जन्मी थी।

किन्दवन्ती है जो महाभारत काल से जुड़ी है। जन्म की कहानी एक रोचक है। पाँचो पाण्डव जब वनवास गये। उस समय खाद्य सामाग्री की कमी थी। एक दिन सामाग्री की कमी थी। आटा थोड़ा था तथा थोड़ी थोडी सब्जी थी। तब ने अपनी व्यंजन बनाने की दक्षता का उपयोग किया।द्रोपदी ने आटे से करारी पूड़ी बनायी तथा मसालेदार पानी बनाया तथा सभी सब्जी भर कर पानी भर कर पाँचो भाइयों को खिलायी जिससे नाम पड़ा पानी पूरी। दूसरी किदवन्ती है,द्रोपदी जब विवाह के बाद ससुराल आयी तब कुन्ती ने उनकी पकवान सम्बधी परीक्षा ली। उन्होंने थोड़ा सा आटा दिया तथा कुछ बची हुई सब्जियाँ देकर स्वादिष्ट पकवान बनाने को कहा।

मेरे जन्म की कथा रोचक है उतनीं ही रोचक है मेरी वर्तमान जिन्दगी समय के साथ मैं भी बदली। मेरा आकर-प्रकार दोनों में परिवर्तन हुए हैं। कुछ लोग़ मुझे राजकचोरी का परिबर्तित रूप मानते हैं। मेरे छः सहोदर हैं।सभी के शरीर के आकार तथा प्रकार भिन्न भिन्न है। कोई लम्बा, कोई अंडाकार, कोई पतला कोई मोटा है। जिन सम्मानीय के दाँत नही मुँह पोपला वह हमारा खाने का आनन्द नही ले पाता। उनके लिये सूजी से बनाये स्पेशल पुचका है। मेरा भरपूर आनन्द दिलाने के लिये विशेष रुप से सहयोगी चटपटे पानी की आवश्यकता है।मीठा पानी खट्टा-पानी, हींग पानी ,पोदीना पानी, खट्टा-मीठा पानी।

वर्तमान काल मे मेरा निर्माण मशीन से होता है। जब दुनियाँ बढ़ती जनसंख्या से परेशान है। मेरी जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। मेरा उपयोग करने वालों की संख्या बढ़ रही है, तो मेरी आबादी भी स्वभाविक रूप से बढ़ेगी।

मैं अपना अपनी बात समाप्त करती हूँ। परहित के लिये भूखे की भूख मिटाती हूँ। बेरोजगार को रोजगार प्रदान करती हूँ।

बीसबी सदी में जैसे जैसे आवागमन के साधन बढे तो पर्यटन बढ़ा जिसका मुझे लाभ मिला और समस्त भारत में मेरा प्रसार हुआ। मैं भारतीय स्ट्रीट फूड संस्कृति का एक प्रतिष्ठित प्रतीक बन गया हूँ। मेरे हर कुरकुरे निवाले के साथ आनन्द दायक और ताजगी भरा अनुभव स्वदेन्द्रियों को मिलता है। मैं एक विशिष्ट पाककला के रूप में दुनियाँ भर में लोक प्रिय हो चुकी हूँ। मैं अब एक व्यवसाय का रूप ले चुकी हूँ। में तो मात्र एक खोखली करारी पूरी हूँ मुझे स्वादिष्ट बनाने में आलू, मटर, छोले तथा बंगाल में केला मेरे अन्दर भरा जाता है।उसके ऊपर मीठी चटनी, दही, हरा धनियाँ, मूली का लच्छा डाल कर जब हाथों में पहुँचती हूँ। देखने वाले दंग रह जाते हैं।

अन्त में इतना ही कहना चाहती हूँ, परहित का कार्य करने में अस्तित्व मिटता है तो मिटा दो।

"परहित कारण तजहि जो देहि
यही कल्याण तत्वमसि है।
मै चली चाट की गली

'मेरा भारत कहाँ खो गया'

- राजीव रंजन,
एडमन्टन, अल्बर्टा, कैनेडा !!

मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जो साधारण लोगों में जीवित था
मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जहां अन्जान के लिए घर द्वार खुले रहते थे

मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जहां बिना जल पान कराये अतिथि को विदा नहीं करते थे
मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जहाँ अतिथि को खाट देकर स्वयं धरती पर सो जाते थे

मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जहां अतिथि को खिलाकर स्वयं उपवास कर लेते थे
मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जहां माँ बाप के साथ पूरा गाँव कन्या दान करता था

मैं ढूंढ रहा हूं उस भारत को
जहां नारी को देवी माना जाता था उसका पूजन होता था
मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जहां कन्या से चरण स्पर्श कराना पाप समझा जाता था

मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जहां पड़ोसी का दुःख और पीड़ा लोग अपनी समझते थे
मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जहां गरीबों को भोजन खिलाये बिना लोग काम पर नहीं जाते थे

मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जहां आशीर्वाद में – सुखी रहो, स्वस्थ रहो, आनंदमय जीवन हो
और दूसरों को भी आनंदित करो कहा जाता था

मैं ढूँढ रहा हूँ उस भारत को
जहां वृक्ष पक्षी पशु और पत्थर पूजे जाते थे
मैं ढूँढ रहा हूँ उस भारत को
जहाँ गुरुओं का आदेश दैवीय समझा जाता था

मैं ढूँढ रहा हूँ उस भारत को
जहां 'प्रातः काल उठके रघुनाथा मात पिता गुरु लागहिं माथा'
की परंपरा थी

मैं ढूँढ रहा हूँ उस भारत को
जहां आकाश वायु अग्नि जल और पृथ्वी पूजे जाते थे
मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जहां कर्ण, एकलव्य और राजा मोरध्वज जैसे दानवीर हुए थे

मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जहां सावित्री लक्ष्मी बाई और अहिल्या बाई जैसी नारी जन्मी थी।
मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जहाँ हरिश्र चंद तारामती की भावना जग उजागर थी।

मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जहाँ सत्य अहिंसा और धर्म का अंकुर हुआ और सभ्यता पल्लवित हुयी।
मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जहाँ बुद्ध नानक गांधी का अहिंसा का संदेश हर प्राणी में निवास करेगा।

मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जहाँ सनातन धर्म के साथ अनेक पंथों का जन्म हुआ और विभिन्न धर्मों को आश्रय मिला।

मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जहाँ वसुधैव कुटुम्बकम की ज्योति प्रज्जवलित हुयी।
मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जहां हिंदी जन जन की बोली थी
अन्य बोलिया उसकी हमजोली थी!
जहां हिंदी फिर से अपनाई जाएगी।

मैं ढूंढ रहा हूँ उस भारत को
जहां हमारी पुरातन समृद्धि
संस्कृति को पूजने और संरक्षण देने वाले कब लोग जागेंगे।

मकरसंक्रांति — महत्व और परम्परा

- कनक चतुर्वेदी, कोलकाता

हिंदू त्योहार प्रायः अध्यात्मिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक मान्यताओ के अनुसार मनायें जातें हैं।मकरसंक्रांतिहिंदू
पंचांग के अनुसार सूर्यकेधनुराशिसे
मकर राशि में प्रवेश को चिहिनत करती है इसी दिन से उत्तरी
गोलार्ध में दिन बड़े होने लगते हैं और रात छोटी होती है — इसे
"उत्तरायण" कहते हैं। ऐतिहासिक रूप से
यह पर्व वेदों और
पुराणों में सूर्य उपासना के रूप में उल्लेखित हैः---
मुख्य इतिहासिक तथ्य
-वेद और अथर्ववेद में सूर्य की उपासना का विवरण मिलता है, जिससे मकर संक्रांति की प्राचीनता पता
चलती है।।
- महाभारत में भीष्म पितामह की इच्छा
मृत्यु की कथा इससे जुड़ी है; उन्होंने उत्तरी
गोलार्ध में सूर्य के उदय की प्रतीक्षा की और
मकर संक्रांति के दिन प्राण त्यागे।।
- गंगा की पृथ्वी पर आविर्भाव की कथा भी इस दिन से जुड़ी है — ऋषि भगीरथ गंगा माता को कपिल मुनि के
आश्रम से सागर तक लेकर आए थे।।
धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व
-सूर्य देव की पूजा और उनके उत्तरी
गोलार्ध में प्रवेश को
शुभ माना जाता है; इस दिन से "पुण्य काल" शुरू होता है।
- नदियों में स्नान (गंगा, यमुना, गोदावरी, कावेरी आदि) और दान (तिल, गुड़, अन्न, वस्त्र) को विशेष पुण्य माना जाता है।
- किसानों के लिए यह फसल कटाई का समय है; ठंडी की फसलें कटने के बाद अन्न भंडारण और नयी फसल की आने की आशा में खुशियां मनाते हैं।
वैज्ञानिक दृष्टिकोण
-सूर्य के उत्तरी गोलार्ध में प्रवेश से दिन बड़े होते हैं और वर्ष भर केलिए ऊर्जा यात्रा का परिवर्तन शुरु होता है ।
-यह पृथ्वी की कक्षीय स्थिति के कारण बदलते ऋतु और फसल चक्र का प्रतीक है।
मकर संक्रांति एक प्राचीन खगोलीय घटनाहै जो धार्मिक, कृषि और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

इस बार मकर संक्रांति बुधवार 14 जनवरी 2025, को मनाई जाएगी। सूर्य सुबह 09:0 पर धनु राशि से निकल कर मकर राशि में प्रवेश करेंगे, और इसी क्षण से पवित्र पुण्यकाल का आरंभ होगा — कुल08घंटे42मिनटका, जिसमें महा पुण्य काल सुबह 09:03 से 10:48तक होगा।
- उत्तरायण की शुरुआत —
- सूर्य के उत्तरायण में प्रवेश से दिन बड़े होने लगते हैं, जो अंधकार पर प्रकाश की जीत का प्रतीक है।
- पापमुक्ति और मोक्ष — गंगास्नान, दानपुण्य और तिलगुड़ का सेवन करने से पाप धुलते हैं और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

प्रमुख परम्पराएँ

1. तिलगुड़ और खिचड़ी
तिल, गुड़, मूंगफली, चावल और दाल मिलाकर खिचड़ी बनाई जाती है। ये "तिलगुड़" मिठास और ऊर्जा का प्रतीक है ।
2. पतंगउड़ान
आँखों में चमक और हवा में झूलती पतंगें सूर्य की किरणों को पकड़ती हैं।
यह प्रथा सूर्य की प्रसन्नता और शांति का संकेत मानी जाती है।
3. दानपुण्य
- तिल, ऊनी कपड़े, कंबल, नए वस्त्र, अनाज, और पशुपक्षियों को भोजन दान किया जाता है।
- विशेष रूप से गरीबज़रूरतमंदों को ऊनी वस्त्र दान करने से शीतकाल में राहत मिलती है।
4. गंगास्नान

सुबह जल्दी उठ कर गंगा या किसी पवित्र नदी में स्नान करने से पुण्य की प्राप्ति होती है।

क्षेत्रीय विविधताएँ

* उत्तरभारत में खिचड़ी, तिलगुड़ की मिठाई, पतंगउड़ाने की परम्परा है।
* पंजाब में लोहड़ी पर आग के चारों ओर गीतनृत्य करने की परम्परा है।
* तमिलनाडु में पोंगल पर्व पर मीठे चावल का पकवान बनाने की परम्परा है।
* असम में भोगालीबिहू के रूप में मनाया जाता है।
* कर्नाटक/केरल/आंध्र में संक्रांति तिलगुड़ के दानपुण्य की प्रथा है।
* उत्तराखंड में घुघुतिया पर बेटीजमाई का स्वागत करने की प्रथा है।
* गुजरात तिल गुड़ दान के साथ ही अंतरराष्ट्रीय पतंग महोत्सव भी मनाया जाता है।
* पौराणिक कथा के अनुसार, जब सूर्य ने अपना रथ उत्तरायण की ओर मोड़ा, तो उन्होंने अपने पुत्र शनि को मकरराशि में देखा। शनि ने सूर्य को प्रणाम किया और सूर्य ने उन्हें "संक्रांति" का वरदान दिया – कि इस दिन जो भी व्यक्ति स्नानदान करेगा, उसके पाप धुल जाएंगे।

आध्यात्मिक और वैज्ञानिक रूप से इस दिन सूर्य की किरणें पृथ्वी पर अधिक सीधी पड़ती हैं, जिससे विटामिनD का उत्पादन बढ़ता है और शरीर में ऊर्जा का स्तर ऊँचा रहता है। आध्यात्मिक रूप से, यह "उजाले" और "नई शुरुआत" का संकेत है अर्थात – अंधकार से प्रकाश की ओर जीवन यात्रा प्रारम्भ होती है।

पूजा-विधि (संक्षिप्त)

1. सुबह जल्दी उठें – स्नान कर सूर्य को जल अर्पित करें।
2. तिलगुड़ का प्रसाद – तिल, गुड़, चावल, दाल मिलाकर खिचड़ी बनाएं।
3. सूर्य मंत्र – "ॐ सूर्याय नमः" या "ॐ भास्कराय नमः" का जप करें।
4. पतंगउड़ान – आसमान में रंगबिरंगी पतंगें उड़ाएँ।
5. दान – तिल, ऊनी वस्त्र, अनाज आदि दान करें।

यही है मकर संक्रांति का सार – सूर्य की रोशनी, तिलगुड़ की मिठास, और दिलों में एकदूसरे के लिए प्रेम भाव से स्नान – दान से पुण्य प्राप्ति करने की भावना के साथ धूमधाम से मनाए। इस दिन सूर्य से प्राप्त ऊर्जाकाजीवन लक्ष्य के लिए सद्पयोग करें।।

नववर्ष

बीत गईं वो सुख की बातें
प्यार की बातें ,गम की रातें
पच्चीस के गलियारे से अब, निकल गया वो सारा मंजर
कैसा बीता, अच्छा बीता
जो बीता, प्रभु इच्छा अंदर
नववर्ष का अभिनंदन करता
छब्बीस का उजियारा आया
प्रकृति का आलिंगन करता।।
नूतन वर्ष हमारा आया
ये वर्ष करता है हमको
नये जीवन के लिए फिर से जागृत
जो बीता, वो बीत गया है।।
कैसा बीता भूलो उसको
जीवन यात्रा एक समर है।।
होते रहो नए पथ पर अग्रसर
जीवन रथ के ये दो पहिए
कहीं ना अटकें
कहीं ना भटकें
समय होता प्रबल बहुत है।।
विश्वास से बढ़ते रहो नए पथ पर
जो बीत गया वो सपना था
आगे सब कुछ अपना है।।
ऐसी सोच बना कर मन में
नववर्ष पर अभियान करो तुम
नववर्ष दे रहा हमें निमंत्रण
निमंत्रण को स्वीकार करो तुम
नवार्ष की पावन बेला में
नव पथ पर प्रस्थान करो तुम।।

प्रस्तुति
– **श्रीमती करुणा मिश्रा**
1984, डैंपियर नगर मथुरा
9411253712

ठंडी में रोज़ाना मूली क्यों ज़रूरी?

सस्ता और असरदार सुपरफूड !

सर्दियाँ आते ही बाज़ारों में ताज़ी, कुरकुरी, रसदार मूली की सुगंध हर तरफ फैल जाती है,लेकिन क्या आप जानते हैं कि यह सफेद रंग की साधारण सी दिखने वाली सब्ज़ी वास्तव में सर्दियों की शक्तिशाली प्राकृतिक औषधि है? आयुर्वेद में इसे शीत ऋतु का 'अग्निदीपक, रक्तशोधक और यकृत शुद्धि कारक कहा गया है। मूली न सिर्फ पाचन को बेहतर बनाती है, बल्कि फेफड़ों, लीवर, ब्लड प्रेशर, वजन और इम्युनिटी – सभी पर गहरा असर डालती है।

1. मूली सर्दियों में ही सुपरफूड क्यों बनती है?

सर्दियों में शरीर की जठराग्नि (Digestive Fire) सबसे

अधिक तेज़ होती है। इस समय मूली – जो कफ को काटने, पित्त को शांत करने और वायु को नियंत्रित करने वाली सब्ज़ी है – शरीर को बिना बोझ डाले तेज़ी से पच जाती है। विटामिन C, पोटैशियम, नाइट्रेट्स

सल्फर कंपाउंड – जो म्यूकस कम करते हैं डिटॉक्सिफाइंग फाइटो-कैमिकल्स, गट क्लींजिंग फाइबर

इसी कारण मूली को सर्दियों में ₹नेचुरल बॉडी क्लीनर₹ कहा जाता है।

2. मूली कब खाएँ कि फायदा दोगुना हो ? आयुर्वेद और आधुनिक विज्ञान की एक ही राय है :

*मूली सुबह-दोपहर खाएँ, शाम रात नहीं। क्योंकि रात में यह गैस पैदा कर सकती है। सबसे बेहतर समयः दोपहर के

खाने में नाश्ते में सलाद मूली परांठा (दोपहर ही)

3. कैसे खाएँ कि फायदा दोगुना हो जाए?

(1) नींबू + काला नमक के साथ सलादः मूली में मौजूद फाइटो कैमिकल्स नींबू के विटामिन C के साथ मिलकर लिवर क्लीनिंग को दोगुना कर देते हैं।

(2) दही के साथ मूली रायताः यह कॉम्बिनेशन पेट की जलन व एसिडिटी खत्म करता है व माइक्रोबायोम मजबूत करता है। (3) मूली का जूस अदरकः सर्दियों की जकड़न, गले की खराश और बलगम में बेहद असरदार। अदरक मूली के

एंजाइम्स का असर बढ़ा देता है।

मूली से भी ज्यादा औषधीय होती हैं।

कैल्शियम आयरन एंटीऑक्सीडेंट रक्त को साफ करती है और थायरॉयड सपोर्टिंग पोषक तत्व देती हैं।

4. मूली के चौंकानें वाले Facts

1ः मूली एक Natural Vasodilator है।

इसमें मौजूद नाइट्रेट्स खून की नलियों को फैलाकर BP को संतुलित रखते हैं।

2ः यह Liver में जमा वसा (फेट) घटाती है।

रिसर्च के अनुसार मूली 'लिपिड मेटाबॉलिज़म' को बढ़ाती है, जिससे फैटी लिवर में सुधार होता है।

3ः मूली थायरॉयड की दुश्मन नहीं, बल्कि मददगार है (सर्दियों में!) सर्दियों में पाचन तेज होने से इसके Goitrogenic प्रभाव negligible हो जाते हैं।

दिन में खाएँ सीमित मात्रा में – कोई दिक्कत नहीं

4ः मूली गट माइक्रोब्स को 'रीसेट' करती है

इसमें पाए जाने वाले सल्फर तत्व खराब बैक्टीरिया को कम करते हैं और पाचन सुधरता है।

5. मूली के 10 Proven Benefits

1. पाचन को दुरुस्त और कब्ज खत्मः इसका फाइबर आँतों को साफ करता है-सुबह पेट साफ।

2. जकड़न, बलगम और सर्दी में राहतः सल्फर विटामिन C Natural expectorant

3. वजन कम करने में मददः लो-कैलोरी, हाई-फाइबर-पूरा पेट भरे, कैलोरी नहीं बढ़े।

4. लिवर और Gallbladder Detoxः मूली की जड़ और पत्तियाँ दोनों लिवर एंज़ाइम्स संतुलित करती हैं।

5. 5. BP कंट्रोलः नाइट्रेट्स खून के प्रवाह को सुधारते हैं।

6. 6. स्किन Glowः विटामिन C कोलेजन बढ़ाता है।

7. 7. एंटी-ऑक्सीडेंट शील्डः फ्री रेडिकल्स कम एंटीएजिंग ।

8. 8. किडनी सपोर्टः मूत्रवर्धक होने से टॉक्सिन निचें जाते हैं।

9. 9. डायबिटीज के लिए हल्की-फुल्की फूडः लो ग्लाइसेमिक + फाइबर ब्लड शुगर नियंत्रण।

10. हार्ट हेल्थ बेहतर कैल्शियम पोटैशियम नाइट्रेट्स हार्ट के लिए बेहतरीन।

6. मूली इन लोगों को सीमित ख खानी चाहिए बहुत ज्यादा गैस वाले रात में खाने वाले जिन्हें IBS या क्रॉनिक गैस होती है बहुत कमजोर पाचन वाले

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

सदस्यता आवेदन प्रपत्र

सेवा में,

मंत्री,
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा।

महोदय,

मैं श्री/श्रीमती/सुश्री.....सुपुत्र/पत्नी .....
मूल निवासी ..... वर्तमान पता .....
गोत्र .....अल्ल..... जन्मतिथि .....फोन नं. .....मोबा.नं. .....
..... ई–मेल आई.डी ..... श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की कुल क्रमागत/आजीवन/सत्र सदस्यता/चतुर्वेदी चंद्रिका की वार्षिक/पांच वर्ष/महासभा एवं पत्रिका की संयुक्त सदस्यता ग्रहण करना चाहता हूँ एवं इस निमित्त **"श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा"** के पक्ष में देय रूपये .....
शब्दों में..... डिजिटल डायरेक्ट ट्रांसफर/नगद/चेक एटपार/बैंक ड्राफ्ट द्वारा प्रदान कर रहा हूँ। प्रमाणित छायाप्रति संलग्न है।

मैं सत्यापित करता हूँ कि –

1. मैं 18 वर्ष से अधिक आयु का माथुर चतुर्वेदी हूँ।
2. मैं घोषणा करता हूं कि मैने महासभा की कुल क्रमांगत/आजीवन/सत्र (किसी एक) सदस्यता के लिए आवेदन कर रहा हूँ।
3. दिनांक 16.06.2024 को महासभा के अधिवेशन में पारित महासभा के संशोधित संविधान 2024 के प्रति मेरी पूर्ण आस्था एवं निष्ठा है तथा तत्–निहित नियमों, उपनियमों, धाराओं, उपधाराओं आदि के पालन के लिये वचनबद्ध हूँ।
4. यदि संज्ञान में आता है कि महासभा से संबद्ध/आस्था रखने वाली माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा/सभा के अतरिक्त मैं किसी अन्य माथुर चतुर्वेदी संस्था का सदस्य हूं तो मेरी श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की सदस्यता स्वतः ही निरस्त मानी जाए इसमें मेरी पूर्ण स्वीकारोक्ति होगी।

दिनांक: भवदीय

संलग्नक: स्व–सत्यापित (ओरिजनल ब्लू इंक)
आधार कार्ड की छायाप्रति

हस्ताक्षर –
नाम–

1. **महासभा का 05 वर्षीय सदस्य ही पत्रिका की आजीवन सदस्य होगा तथा महासभा का सत्र सदस्य पत्रिका की वार्षिक सदस्यता ग्रहण कर सकेगा।**
2. **मैं ..... उपरोक्त सदस्यता आवेदन पत्र में दिये गये सभी विवरण को महासभा के सदस्यता हेतु सत्यापित करता हूँ।**

हस्ताक्षर –
नाम –
कार्यकारिणी सदस्य
मोबाईल नंबर

महासभा सदस्यता शुल्क	पत्रिका सदस्यता शुल्क	महासभा आजीवन एवं 5 वर्षीय पत्रिका संयुक्त
कुल क्रमागत रूपये 5001/–	वार्षिक रूपये– 251/– (नवीनीकरण शुल्क)	सदस्यता
आजीवन सदस्यता रूपये 501/–	महासभा सत्र सदस्यता एवं पत्रिका वार्षिक सदस्यता रूपये– 352/–	रूपये – 1501/–
सत्र सदस्यता रूपये 101/–	पत्रिका (पांच वर्ष) रूपये– 1000/– (केवल महासभा सदस्यों हेतु)	

पता – मंत्री, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, 405/406 चिरंजीव टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली– 110019

दिनांक 03/12/2025

अंक क्रमांक 12

प्रति,
प्रभारी
PSO BPL

महोदय,

चतुर्वेदी चन्द्रिका मासिक पत्रिका जिसका आर.एन.आई. नं. एमएआर/2000/2438 पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं. एल–2/भो.स./44/2024–26 है। पत्रिका की 2,905 द्वारा पोस्ट करने का कष्ट करे।

विवरण निम्नानुसार है :–

1	आर.एन.आई. नं. एमएआर/2000/2438	
2.	पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं. एल–2/भो.स./44/2024–26	
3.	डिस्पेच तारीख	: 03 तारीख प्रति माह
4	वजन	: 0.076 gm.
5	सिंगल बण्डल	: 2,905
6.	अदर्स बण्डल	: 2,905
7	रेट	: 01/-

संलग्न :- पोस्टल पंजीयन छायाप्रति।

डिस्पेच प्रभारी

शाखा समाचार

फरीदाबाद

श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा फ़रीदाबाद में धूम धाम से मनाया दीपावली मिलन हर वर्ष की श्री माथुर चतुर्वेदी शाखा सभा फ़रीदाबाद ने दीपावली मिलन समारोह के आयोजन दिनांक 12 अक्टूबर 2025 को किया। इस वर्ष का दीपावली मिलन उत्सव दीपावली से पहले आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का आरम्भ श्री शैलेन्द्र जी (फरौली) द्वारा पारंपरिक गणपति वंदना द्वारा किया गया। इसके बाद श्री प्रवीण जी(मथुरा) द्वारा सरस्वती वंदना से माहौल भक्तिमय बना रहा। कार्यक्रम में ऊर्जा लाते हुए नन्हीं मुन्नी आश्विका और नीतिका सुपुत्री श्री अंकित चतुर्वेदी (फरौली) ने सुंदर गीत गाकर सभी का मनोरंजन किया। कु. सोनल पुत्री श्री संजू चतुर्वेदी (फरौली) द्वारा सुंदर भजन और कुमारी साक्षी सुपुत्री श्री सुनील मिश्रा (आगरा) द्वारा प्रस्तुत किये गए फ़िल्मी गीतों ने समा बांध दिया। कुमारी भव्या सुपुत्री श्री राघव जी (फरौली) ने खूबसूरती से मंच संचालन करते हुए यह आशा की किरण जागृत की कि समाज के युवा भी पूरे मनोयोग से समाज के कार्यक्रमों में बढ़ चढ़ कर अपनी प्रतिभा का प्रयोग करते हुए भाग लेने के इच्छुक हैं। यह पहली बार थी जब किसी सामाजिक कार्यक्रम में किसी युवा ने मंच संचालन में बखूबी अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। कु. भव्या अभी सीनियर सेकेंडरी में विद्यार्थी हैं। कु. साक्षी के रूप में शाखा सभा को एक प्रतिभाशाली और सुरीली गायिका प्राप्त हुई, जो इस वर्ष की उपलब्धि है। सुरीले स्वर के साथ मुस्कुराते चेहरे पर लिए आत्मविश्वास से परिपूर्ण फ़िल्मी गीतों की मेडले से साक्षी ने सभी का मन मोह लिया।

श्री राघव जी (फरौली) द्वारा मधुर कविता प्रस्तुति फरीदाबाद शाखा सभा के कार्यक्रम को परिपूर्ण करने में सफल रही। इसके बाद नन्हीं मुन्नी आश्विका ने सुंदर नृत्य ने कार्यक्रम में स्फूर्ति का स्पंदन सभी ने महसूस किया। कु नीतिका द्वारा 'दादा जी की छड़ी' पर सुंदर नृत्य करके सबका मन मोह लिया।

शाखा सभा अध्यक्ष श्री सुशील जी (फरौली) ने अपने संबोधन में जहाँ एक ओर कार्यक्रम में सम्मिलित सभी बांधवों का धन्यवाद किया वहीं उन्होंने कई परिवारों का सामाजिक कार्यक्रमों में रूचि ना लेने पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि फ़रीदाबाद, जहाँ केवल 33 परिवार हैं चतुर्वेदियों के, वहां भी अगर लोगों की रूचि नहीं है सामाजिक कार्यक्रमों में तो यह मनन का विषय है। उन्होंने इस विषय पर अन्य बांधवों से भी अपने विचार साझा करने की अपील की। इस विषय पर श्री प्रदीप जी(फरौली), श्री अशोक जी (होलीपुरा), श्री आशुतोष जी (फरौली), श्री राज जी (फरौली) आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये। सभी ने इस विषय को गंभीर बताते हुए चतुर्वेदी परिवारों से व्यक्तिगत भेंट करने का प्रस्ताव स्वीकार किया। इस विषय पर सभी ने चिंता व्यक्त की कि पहले से कार्यक्रम की तिथि पता होने के बावजूद जो लोग कहीं सैर को निकल जाते हैं उनका समाज के प्रति दायित्व क्या बनता है।

श्री संजय जी (होलीपुरा), सचिव शाखा सभा ने दिल्ली एनसीआर के दीपावली मिलन से सम्बंधित सूचना और इससे सम्बंधित डायरेक्टरी विषय पर स्थिति स्पष्ट करते हुए सभी सदस्यों से कार्यक्रम में बड़ी संख्या में सम्मिलित होने के लिए आव्हान किया।

इसके बाद सभी का मनपसंद अन्ताक्षरी कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें महिलाओं और पुरुषों दोनों के दलों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इसके पश्चात पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके पश्चात शाखा सभा ने एक नई शुरुआत के रूप में समाज में अपने उद्यम चला रहे सदस्यों को मुफ्त में अपना स्टाल लगाने का अवसर दिया। इस कार्यक्रम में श्रीमती निवेदिता पत्नी श्री राघव जी (फरौली) एवं श्रीमती मीना पत्नी श्री प्रवीण जी (मथुरा) और उनकी पुत्री सारिका ने अपने स्टाल लगाये। अंताक्षरी के उपरांत 'सेल आवर' के दौरान दोनों के स्टाल पर अच्छी भीड़ देखने को मिली।

श्री शिव कुमार जी (फरौली) ने सभी सदस्यों का कार्यक्रम में सम्मिलित होने पर धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर समाज में पिछले एक वर्ष में दिवंगत हुए लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। हर वर्ष की है तरह इस कार्यक्रम में भी भोजन का दायित्व चतुर्वेदी समाज के जाने माने माखन भोग कैटरर, श्री गौरव जी को दिया गया था। कार्यक्रम की विशेषता युवाओं का बढ़ चढ़कर सम्मिलित होना और समाज के उद्यमियों को अपने उद्यम में स्टाल लगाकर सहयोग करना रहा। कार्यक्रम में कार्यकारिणी के सभी सदस्यों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ जिनमें श्री सुशील जी (अध्यक्ष), श्री अशोक जी (उपाध्यक्ष), श्री संजय जी (सचिव), श्री रुचिर जी (कोषाध्यक्ष), श्री प्रदीप जी, श्री शैलेन्द्र जी, श्री सुनील जी, श्री शिव कुमार जी, श्री प्रवीण जी का विशेष सहयोग रहा।

000

जयपुर

चतुर्वेदी युवा सभा द्वारा सामुहिक गोठ में प्रतिभाओं को किया

सम्मानित किया। श्री माथुर चतुर्वेदी युवा सभा, जयपुर की ओर से रविवार को सामूहिक गोठ एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का भव्य आयोजन जयपुर में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण और दीप प्रज्वलन से हुआ। जिसमें समाज के प्रबुद्ध सम्मानीय सदस्यों ने भाग लियाI इसके पश्चात सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों की शुरुआत हुई। जिसमें लहरिया

प्रतियोगिता, मूर्ति निर्माण प्रतियोगिता और मेहंदी प्रतियोगिता विशेष आकर्षण का केंद्र रही। कार्यक्रम में अनेक रोचक खेल प्रतियोगिताओं जैसे बैडमिंटन, खो खो, म्यूजिकल चेयर, एनिमल वाक का आयोजन किया गया। जिससे वातावरण उत्साह और उल्लास से भर गया। खेलकूद की प्रतियोगिता श्री रविन्द्र जी, श्री मोहित जी, सुश्री अपूर्वा जी ने आयोजित करवायीI

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण लहरिया उत्सव रहा। जिसमें 50 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया। समारोह में शैक्षणिक क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां अर्जित करने वाले छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। प्रतिभाओं को रघु सलोनी स्मृति पुरस्कार सुश्री आध्या जी पुत्री श्री अरविंद जी को, डॉ. महेश जी एवं श्रीमती करुणा जी द्वारा घोषित पुरुस्कार श्री देव पुत्र श्री आलोक जी को, स्व. लीलाधर जी स्मृति पुरुस्कार सुश्री विधि जी पुत्री श्री ओम प्रकाश जी, स्व.महेश चंद–कमला चतुर्वेदी स्मृति पुरुस्कार सुश्री योगिता जी पुत्री श्री मनु जी को तथा स्व. राधेलाल चौबे–श्रीमती मालती देवी स्मृति पुरुस्कार सुश्री समृद्धि जी पुत्री श्री विवेक जी को 12 कक्षा के विभिन्न संकाय जैसे बायोलॉजी, गणित, कला एवं कामर्स में समाज में सबसे अधिक अंक लाने की उपलब्धि पर दिए गएI इन सभी विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र एवं नकद राशि देकर पुरस्कृत किया गया।

इनके साथ ही सुश्री अनुष्का जी पत्नी श्री रविदीप जी को सी.ए. फाइनल करने पर, श्री अर्पित जी पुत्र श्री राजेश जी को राजस्थान हाउसिंग बोर्ड में सूचना अधिकारी नियुक्त होने पर, दसवीं कक्षा में सुश्री नियति जी पुत्री श्री ओमप्रकाश जी के 97 प्रतिशत अंक लाने पर एवं सुश्री भाव्या जी पुत्री श्री योगेश जी 95% अंक लाने पर,अभिषेक जी पुत्र श्री अरुण जी को PhD करने के उपलक्ष्य में, श्री विक्रम जी के राज्य सरकार द्वारा पुरस्कृत होने के उपलक्ष्य में सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के बाद विभिन्न सांस्कृतिक एवं खेलकूद प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण किया गया। यह सम्मान कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. लोकेश जी, डायरेक्टर, मेडिकल डिपार्टमेंट, GoR, श्री गौरव जी, RAS, GoR, श्री अंशुमान जी, उपाध्यक्ष, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा,श्री सुनील

जी, अध्यक्ष, श्री माथुर चतुर्वेदी युवा सभा, जयपुर, श्री गोपाल चतुर्वेदी, मंत्री, युवा सभा, जयपुर, श्रीमती अर्चना, उपाध्यक्ष,युवा सभा, श्री गिरधारी पूर्व अध्यक्ष, युवा सभा,जयपुर, श्री महेंद्र जी, पूर्व अध्यक्ष, युवा सभा,जयपुर, श्री विजय जी, कोषाध्यक्ष, युवा सभा,जयपुर, श्री सागर जी, सं. सचिव,युवा सभा,जयपुर की उपस्थिति में दिया गया।

कार्यक्रम का स्वागत भाषण श्रीमती अर्चना जी,उपाध्यक्ष, युवा सभा,जयपुर एवं संयोजिका,महिला प्रकोष्ठ के द्वारा दिया गया।

कार्यक्रम के दौरान ग्रामीण महिलाओं के द्वारा आर्टिजन शॉप एवं निर्झरी ब्रांड के अंतर्गत निर्मित उत्पादों के फैशन शो का आयोजन भी किया गया।

कार्यक्रम के दौरान श्री वरुण जी, व्याख्याता, महावीर स्कूल के सौजन्य से रितु दीदी एवं स्वीटी दीदी, हार्ट फुलनेस संस्था के द्वारा मैडिटेशन का सेशन लिया गया।

–श्री अभिषेक चतुर्वेदी, जयपुर

समाज समाचार

- यह सच है कि हमारा चतुर्वेदी समाज अपने संस्कारों के कारण विशिष्ट रूप से पहचाना जाता था। धर्म परायणता,रीति रिवाज,विशुद्ध शाकाहारी खान पान एवं ईमानदारी हमारी विशेषता रही है, इन्हीं कारणों से आकर्षक व्यक्तित्व लिए हर किसी की अलग ही पहचान के साथ आदर और सम्मान हुआ करता था। समय के प्रवाह में अन्य समाजों की देखा-देखी और आधुनिक बनने की होड़ में हम बहुत कुछ छोड़ते चले गये परिणाम सर्वविदित है।समय चक्र में हमने प्रातः एवं संध्या ईश आराधना छोड़ी,ललाट पर तिलक छोड़ा तो पहनावे में धोती छोड़ी यहां तक कि चोके की कच्चे रसोई छोड़ी। लेकिन आज भी नहीं के बराबर चन्द लोग हैं जिन्होंने अपने संस्कार नहीं छोड़े हैं। इन्हीं चन्द लोगों में होलीपुरा निवासी कलकत्ता प्रवासी श्री राजेश्वर नाथ जी सुपुत्र स्व0 डालचन्द्र जी का नाम उल्लेखनीय है जो आज भी कच्ची रसोई (चौके) में अन्न ग्रहण करते हैं। यात्रा में बिना स्नान किए अन्न ग्रहण नहीं करते हैं। हिन्दुस्तान मोटर्स से सेवानिवृत्त आ0 राजेश्वर नाथ जी की पहचान कलकत्ता समाज में एक समर्पित कार्यकर्ता के रुप में रही है। आप मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी के आजीवन सदस्य है जहां नित्य रोगियों की सेवार्थ जाना दिनचर्या का अंग रहा। अन्तिम संस्कार में शामिल सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेना आपकी विशेषता रही है। कलकत्ता सभा के सहमंत्री एवं होलीपुरा विकास संघ के आप मन्त्री रहे हैं।आप स्व0 रामलाल जी, स्व0 महेन्द्र नाथ जी ,स्व0 मानसिंह जी पाण्डे एवं स्व0 राजेन्द्र नाथ जी के विश्वासपात्र रहे हैं जिनके साथ कई सामाजिक कार्य किये मैं।आज आप कलकत्ता के बड़ाबाजार स्थित 50 ढाकापट्टी अपनी जड़ों से जुड़कर जीवन जी रहे हैं। आपके जीवन का आदर्श रहा है कि अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया।ऐसे व्यक्ति विरले ही होंगे समय रहते ऐसे व्यक्तित्व को सबके सम्मुख आदर्श रूप में प्रस्तुत करने का दायित्व समाज का होना चाहिए।

– करुणेश चतुर्वेदी, ग्वालियर

- चि0अखिलेन्दु पुत्र श्रीमती पुष्पलता- श्री कृष्ण गोपाल चतुर्वेदी (नरवर/ग्वालियर) का शुभ विवाह दिनांक 24 नवम्बर 2025 को ग्वालियर में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महासभा अन्नपूर्णा सहायतार्थ 1100/- व पत्रिका सहायतार्थ 501/- सप्रेम भेंट करते हैं। बधाई। (र.क्र.-3343)
- श्री मनीष मिश्रा व श्रीमती आभा मिश्रा (मैनपुरी/धनबाद) के सुपुत्रों चि.जय मोहन व चि.प्रीतिश के विवाह के अवसर पर महासभा की अन्नपूर्णा सहायतार्थ 2100/- प्रदान किया। बधाई। (र.क्र.-3345)
- श्रीमती संजना एवं श्री संजय चतुर्वेदी (होलीपुरा/लखनऊ) ने अपनी सुपुत्री सौ प्रतिभा रुनझुन के 21 नबंवर 2025 को लखनऊ में सम्पन्न शुभ विवाह के अवसर पर महासभा को रु. 1100/ प्रदान किए। बधाई। (र.क्र.-3350)
- श्री जयंत चतुर्वेदी (इटावा/लखनऊ) ने अपने पिताजी स्व. श्री नरेश चंद्र चतुर्वेदी जी की पुण्यतिथि के अवसर पर अन्नपूर्णा सहयोगार्थ 12000/- रुपये प्रदान किये। (र.क्र.3353)

बिछड़े स्वजन

* श्रीमती मीरा चतुर्वेदी पत्नी विंग कमांडर स्व. विनोद चतुर्वेदी (इटावा/नोएडा) का स्वर्गवास लगभग 74 वर्ष की आयु में अपने पुत्र कर्नल मोहित चतुर्वेदी के पास दिनाँक 9 दिसंबर 2025 को नोएडा में हो गया।
* श्री अशोक चतुर्वेदी (टीटू) पुत्र स्व० सुरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (जहांगीरपुर/लखनऊ) का स्वर्गवास लगभग 63 वर्ष की आयु में दिनाँक 9 दिसंबर 2025 को हो गया।
* श्री हरेश पाण्डेय (मैनपुरी) के पुत्र गौरव की पत्नी राशि उम्र लगभग 45 वर्ष का दिनाँक 10/12/25 को नागपुर में निधन हो गया।
* श्री प्रकाश चंद्र चतुर्वेदी 'दरोगा' पुत्र स्व. श्री राम गोपाल जी (तालगांव/आगरा) का 90 वर्ष की आयु में निधन दिनाँक 11 दिसंबर 2025 को हो गया।
* श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी पत्नी श्री योगेन्द्र नाथ जी (चंद्रपुर/दिल्ली) का स्वर्गवास 19 दिसम्बर 2025 को हो गया। आपका अधिकतर सेवाकाल भोपाल एवं दिल्ली में रहा था।
* श्रीमती किरण चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री योगेंद्र नाथ चतुर्वेदी (चंद्रपुर/कानपुर), पूर्व उपाध्यक्ष महासभा का स्वर्गवास दिनांक 29 अक्टूबर 2025 को कानपुर में हो गया।
* सुश्री रत्ना "बब्बी" सुपुत्री स्व. उमेश चन्द्र चतुर्वेदी (तरसोखर/हरदोई) का निधन 15 नवंबर 2025 को हरदोई में हो गया।
* श्री वत्सल "गोगू" सुपुत्र स्व संजय चतुर्वेदी (तरसोखर/हरदोई) का निधन 5 दिसंबर 2025 को हरदोई में हो गया।
* श्रीमती उर्मिला चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री ओंकारनाथ चतुर्वेदी (मथुरा) का स्वर्गवास दिनांक 22 दिसंबर 2025 को मथुरा में हो गया।

चाय की तलब

- विवान चतुर्वेदी, नोएडा

फिजां में घुल रही हैं महक अदरक की,
आज सर्दी भी चाय की तलबगार हो गईं !!

अदाएं तो देखिए।
बदमाश चाय पत्ती की,
जरा दूध से क्या मिली शर्म से लाल हो गई !!

थोड़ा पानी रंज का उबालिए,
खूब सारा दूध खुशियों का,
थोड़ी पत्तियां ख्यालों की !!
थोड़े गम को कूटकर बारीक,
हंसी की चीनी मिला दीजिए,
उबलने दीजिए ख्वाबों को,
कुछ देर तक !!
यह जिदगी की चाय हैं जनाब!!
इसे तसल्ली के कप में छानकर,
घूंट-घूंट पीकर मजा लीजिए !!

2026 के महत्वपूर्ण त्यौहार

नया साल – 01 जनवरी (गुरुवार)
मकर संक्रांति – 14 जनवरी (बुधवार)
बसंत पंचमी – 23 जनवरी (शुक्रवार)
महाशिवरात्रि – 15 फरवरी (रविवार)
होली – 04 मार्च (बुधवार)
राम नवमी – 26 मार्च (शुक्रवार)
हनुमान जयंती – 02 अप्रैल (गुरुवार)
हरियाली तीज – 15 अगस्त (शनिवार)
स्वतंत्रता दिवस – 15 अगस्त (शनिवार)
नाग पंचमी – 17 अगस्त (सोमवार)
रक्षा बंधन – 28 अगस्त (शुक्रवार)
कृष्ण जन्माष्टमी – 04 सितंबर (शुक्रवार)
गणेश चतुर्थी – 14 सितंबर (सोमवार)
दशहरा – 20 अक्टूबर (मंगलवार)
करवा चौथ – 29 अक्टूबर (बुधवार)
धनतेरस – 06 नवंबर (गुरुवार)
दीपावली – 08 नवंबर (शनिवार)
गोवर्धन पूजा – 10 नवंबर (सोमवार)
भाई दूज – 11 नवंबर (मंगलवार)
छठ पूजा – 15 नवंबर (शनिवार)

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

जय माता दी

|| श्रद्धांजलि ||

जय माता दी

स्व श्रीमती निर्मला चतुर्वेदी
पत्नी स्व श्री रमाकांत चतुर्वेदी (पुरा-कन्हैरा)
जीवन सफर: १ अप्रैल १९४४ से ५ अक्टूबर २०२५

उनका निधन एक ऐसी रोशनी का बुझ जाना है जिसने हर दिल को अपने स्नेह और करुणा से आलोकित किया।
उनके दिये हुए संस्कार प्रेम और आशीष को हम कभी भूल न पाएंगे।

|| ऊं शांन्ति ||

शोकाकुल परिवार:

पुत्र - पुत्र वधु: श्री सुनील - श्रीमती भावना, श्री सुशील - श्रीमती पारुल, श्री शैलेन्द्र

पौत्र/पौत्री - पौत्री दमाद: सुगंध - ब्रैनडन, तान्या - अंशुल, संभव

पुत्री - दमाद: श्रीमती मधु - श्री सौरभ चतुर्वेदी, श्रीमती पूनम - श्री देवेन्द्र चतुर्वेदी, श्रीमती अलका - श्री आलोक चतुर्वेदी, श्रीमती रेणू - श्री गौरव चतुर्वेदी

पौत्र - पौत्र वधु: सुलभ - पल्लवी, संयम - ऐश्वर्या, शुभम - किजंल

पौत्र/पौत्री - पौत्री दमाद: सौम्या - शौनक, अलंकृता, मुस्कान, हर्ष

सुनील-9667667937

|| ऊं शांन्ति ||

(र.क्र. 3349)

अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि

जन्म: 24.11.1937

स्वर्गवास: 02.11.2025

श्रीमती सुधा चतुर्वेदी

पत्नी स्व. श्री जय किशन चतुर्वेदी

होलीपुरा-कानपुर-जबलपुर

शोकाकुल

पुत्र–पुत्रवधु

श्री विनीत व सुवीणा चतुर्वेदी

[Choubay & Company
59/49-A, Birhana Road
Kanpur - 208001]

श्री विनम्र व सोनल चतुर्वेदी

पुत्री–दामाद

श्रीमती वनिता व सुनील चतुर्वेदी

श्रीमती वंदिता व मनीष चतुर्वेदी

पौत्र

राघव, माधव, नमन

पौत्री–दामाद

तन्या – सक्षम

दौहित्र–वधु

तन्मय - विराग,

पार्थ

दौहित्री

नंदिता, अनन्या

एवं समस्त परिवारजन

हमारे साथ श्री रघुनाथ तो
किस बात की चिंता ।
चरण में रख दिया जब माथ तो
किस बात की चिंता ।
किया करते हो तुम दिन रात क्यों
बिन बात की चिंता ।
तेरे मालिक को रहती है तेरी हर बात की चिंता ।
दादी का सबसे प्रिय भजन — जिसे हम सब याद करते हैं
और अक्सर साथ में गुनगुनाते हैं।

आज मन भारी है, जैसे कोई युग चुपचाप समाप्त हो गया हो।
शायद दादी को हम सब से पहले ही आभास हो गया था कि अब जाने का समय आ गया है — उन्होंने स्वयं को बड़ी गरिमा और शांति से तैयार कर लिया था।
गरिमा, सादगी, शालीनता और समर्पण — ये चारों गुण उनमें सहज रूप से बसते थे।
उनकी उपस्थिति से हर कमरे में उजाला हो जाता था, उनकी शांत शक्ति हमें सदा याद रहेगी।
उन्हें एक अद्भुत वरदान प्राप्त था — सभी की पसंद, इच्छा और आवश्यकता को बिना कहे ही समझ लेने का।
उनका यह गुण उनके अपार स्नेह, सहजता और गहरी आत्मीयता का प्रतीक था।
हम बच्चों का सौभाग्य रहा कि हम दादा-दादी, दोनों के स्नेह और मार्गदर्शन में पले-बढ़े।
उनके साथ बिताए वे बचपन के दिन आज भी याद हैं — जब शाम को मिलकर भजन सुनते, आरती गाते, और संस्कारों को आत्मसात करते थे।
उन्हीं वर्षों में हमने सीखा कि जीवन में सबसे बड़ा गुण है — विनम्रता, दया और नम्रता।
दादी ऐसी थीं जिनकी संगति में कोई भी अकेला महसूस नहीं करता था।
अपनी गर्मजोशी और अपनापन भरे स्वभाव से वह हर उम्र के लोगों को जोड़ लेती थीं।
भिन्न परिवेश से आने के बावजूद, उन्होंने हर परिस्थिति को सहजता से अपनाया और सभी को अपने आसपास सहज महसूस कराया।
आज भी ऐसा लगता है कि वह यहीं हमारे बीच हैं — हम बस उन्हें इतनी जल्दी खोना नहीं चाहते थे।
पर क्या कोई भी कभी इसके लिए सच में तैयार होता है?
उनकी उपस्थिति हमारे घर की शक्ति थी — वह हमारे लिए वह बुजुर्ग थीं जिनसे हम सलाह, सहारा और मार्गदर्शन पाते थे।
उन्हें खोना हमारे दिलों पर बहुत भारी पड़ा है।
उनका स्नेह, उनकी मुस्कान, और उनका आशीर्वाद — हर कोने में आज भी महसूस होता है।
उनके प्रति प्रेम और आदर में समर्पित कुछ पंक्तियाँ...
जल सी शीतल, धैर्य की मूर्ति आप,
मुस्कान की रेखाएं चेहरे पर सजाए।
राम भजन में लीन, जीवन जिया आपने,
सुख-दुख में भी, मुस्कान बिखराए।
दादी... आपकी याद हर पल हमारे साथ है।
हम आपको बहुत याद करते हैं।

-तन्या चतुर्वेदी

(र.क्र. 3344)

प्रथम पुण्य तिथि

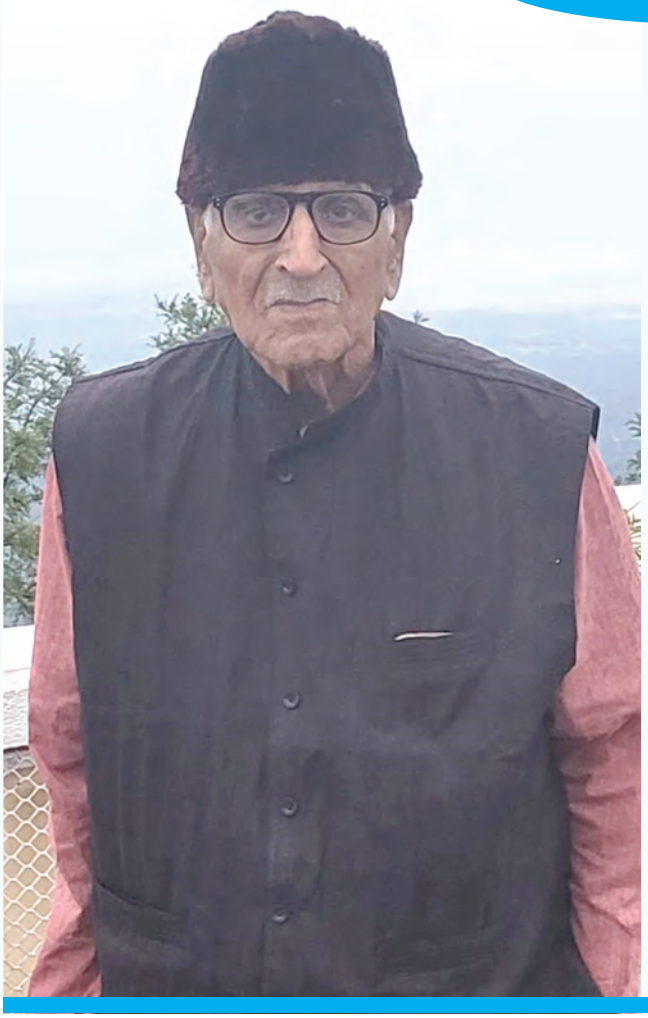

स्व. श्री प्रताप चन्द्र चतुर्वेदी

(तरसोखर/ भोपाल)

(सुपुत्र स्व. श्री रामस्वरूप चतुर्वेदी
स्व. श्रीमती कलावती चतुर्वेदी)

1 जून,1935 - 10 दिसम्बर, 2024

आपकी बातें और आपका स्नेह, आज भी हमारी स्मृतियों में जीवित है। आपकी पुण्यतिथि पर सादर श्राद्धांजलि।

दिनांकः1 दिसम्बर, 2025 (सोमवार)

श्रद्धावनत

वसुंधरा चतुर्वेदी (पुत्री), गगन चतुर्वेदी (दामाद), वाणी चतुर्वेदी (नातिन), अविष चतुर्वेदी (नाती) एव. समस्त चतुर्वेदी परिवार

पिता वह व्यक्ति होते हैं जिनके जाने के बाद हमें एहसास होता है कि हमने अपने जीवन की ढाल खो दी है। एक बेटी का अभिमान होते हैं उसके पिता।

मेरे पिता श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी का जन्म 1 जून 1935 को हुआ। उनकी शुरुआती शिक्षा कोलकाता में हुई, बाद में जब कलकत्ते में हिंदू - मुस्लिम दंगे हुए तो उनका परिवार अपने पैतृक गाँव तरसोखर वापस आ गया। आगे की शिक्षा उन्होंने ग्वालियर से पूरी की। जब नौकरी का समय आया तो उनका चयन सेना, पुलिस व वन विभाग में हुआ। अपनी मां के आदेशानुसार उन्होंने अपनी सेवाएं वन विभाग को देने का निश्चय किया। वह काफी ईमानदार, अपने सिद्धान्तों व उसूलों के पक्के, मिलनसार, प्रेरक व प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी थे। वह हर किसी की मदद करते थे फिर वह समाज का व्यक्ति हो या अन्य कोई भी व्यक्ति हो। जो लोग मेरे पिता को जानते हैं। वह मानेंगे कि किसी भी पार्टी का नेता या ब्यूरोक्रेट सभी उनका सम्मान करते थे। वह उनके जाने के बाद भी उनका आदर करते हैं।

अपने कार्यकाल के दौरान वह काफी समय बुंदेलखंड क्षेत्र में रहे जहां उनका मां पीतांबरा का आशीर्वाद प्राप्त हुआ जो कि मैंने भी उन पर हमेशा अनुभव किया। सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने अपनी सेवाएं भारतीय वन प्रबंधन संस्थान-भोपाल व बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल को दी।

उनके आदर्श और उनकी बातें आज भी हमारी स्मृतियों में जीवित है।

- वसुंधरा चतुर्वेदी (पुत्री)

(र.क्र. 3351)

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' जनवरी 2026

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak2024.chandrika@gmail.com

(र.क्र. 3171–8/12)